घटती घटना

सत्य के साथ...जनहित में बात...

www.ghatatighatana.com **अम्बिकापुर,वर्ष 23, अंक - 08- रविवार 08- नवम्बर 2026,पृष्ठ - 8 मूल्य 2 रूपये** RNI Reg.No.- CHHHIN/2004/15050,डाक पंजीयन. क्रं. 13/Surguja DN/ 2026-2028



अयोध्या में दीपोत्सव....30 लाख दीपों की रोशनी की साक्षी बनी रामनगरी,बना नया रिकॉर्ड,श्रीराम का हुआ राज्याभिषेक

राम भारत के प्राण हैं भारत के आत्मसम्मान हैं : योगी आदित्यनाथ

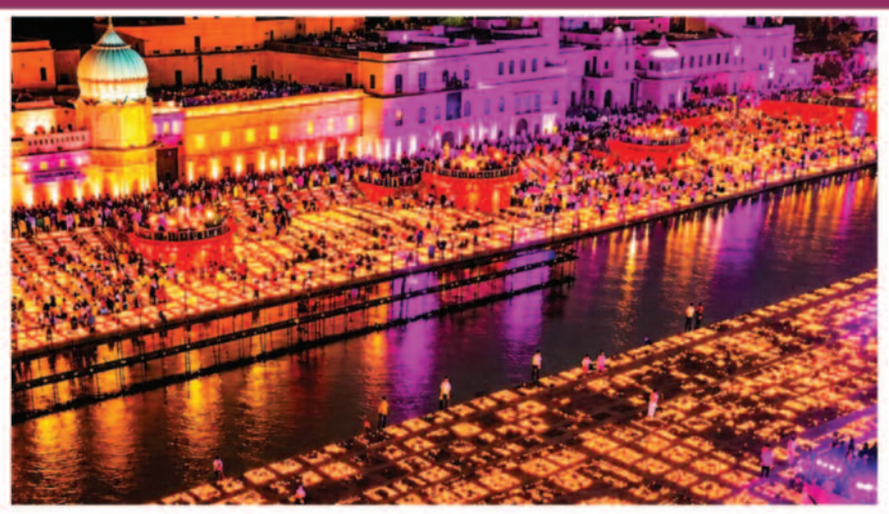
अयोध्या,07 नवम्बर 2026। रामनगरी शनिवार को एक बार फिर इतिहास की साक्षी बनी। अवसर था दीपोत्सव का, जब भक्ति, आस्था, संस्कृति और उल्लास के अद्भुत संगम ने पूरी अयोध्या को उत्सव के रंग में रंग दिया। सुबह साकेत महाविद्यालय से निकली श्रीराम राज्याभिषेक शोभायात्रा से शुरू हुआ उत्सव देर शाम तक 30 लाख दीपों की रोशनी,सरयू की महाआरती,ड्रोन शो और आतिशबाजी के बीच अपने चरम पर पहुंचा। उपराष्ट्रपति सीपी राधाकृष्णन, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और राज्यपाल आनंदीबेन पटेल की मौजूदगी ने आयोजन को ऐतिहासिक बना दिया। दीपोत्सव का शुभारंभ सुबह 10 बजे साकेत महाविद्यालय से श्रीराम राज्याभिषेक शोभायात्रा के साथ हुआ। करीब तीन किलोमीटर की दूरी तय कर शोभायात्रा रामकथा पार्क पहुंची। इसमें प्रदेश सरकार की उपलब्धियों को दर्शाती 14 झांकियों के साथ रामायण के सातों कांडों पर आधारित झांकियां आकर्षण का केंद्र रहीं। 14 राज्यों के 500 से अधिक कलाकारों ने अपनी-अपनी लोकसंस्कृतियों और परंपराओं की मनमोहक प्रस्तुतियां दीं। शोभायात्रा जैसे ही साकेत महाविद्यालय से आगे बढ़ी, रामनगरी की सड़कें आस्था और उल्लास से भर उठीं। जगह-जगह खड़े अयोध्यावासियों ने पुष्पवर्षा कर कलाकारों का स्वागत किया। कहीं जय श्रीराम के जयघोष गूंज रहे थे तो कहीं लोग मोबाइल में इस ऐतिहासिक पल को कैद करने में जुटे थे। बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक में उत्साह देखते ही बन रहा था।

उपराष्ट्रपति,सीएम,राज्यपाल व संतों ने किया राजतिलक

इसी बीच उपराष्ट्रपति सीपी राधाकृष्णन का आगमन हुआ और रामकथा पार्क में श्रीराम के राज्याभिषेक की प्रक्रिया शुरू हुई। रामचरितमानस की चौपाई 'प्रथम तिलक वशिष्ठ मुनि कीन्हा, पुनि सब बिप्रन्ह आयसु दीन्हा। सुत बिलोकि हरषीं महतारी, बार बार आरती उतारी...'',मानो मंच पर साकार हो उठी। सबसे पहले उपराष्ट्रपति ने प्रभु श्रीराम का राजतिलक किया। इसके बाद मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और राज्यपाल आनंदीबेन पटेल ने तिलक कर आरती उतारी। उपमुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक सहित मंत्रिमंडल के अन्य सहयोगियों और रामनगरी के प्रमुख संतों ने भी बारी-बारी से राम दरबार की आरती की।

अयोध्या में लेजर शो से जगमगाए राम की पैड़ी और सरयू घाट

दीपोत्सव के दौरान राम की पैड़ी और सरयू घाट पर भव्य लेजर लाइट शो का आयोजन किया गया। रंग-बिरंगी रोशनी से घाटों को सजाया गया। सरयू नदी के किनारे स्थित 56 घाटों को 30 लाख से अधिक मिट्टी के दीपकों से रोशन किया जाएगा। इसके लिए घाटों पर दीप सजाने की तैयारियां की गई हैं।



सीएम योगी ने कहा...जय श्रीराम बोलने पर कोई प्रतिबंध नहीं लगा सकता

सीएम योगी ने कहा...अब अयोध्या में जय श्रीराम बोलने पर कोई प्रतिबंध नहीं लगा सकता। प्रदेश में किसी को पूजा करने से नहीं रोका जा सकता। न ही कोई दंगा करने की हिम्मत कर सकता है। अब किसी बेटी-बहन को सुरक्षा के लिए गुहार नहीं लगानी पड़ेगी। बेटियों की सुरक्षा से खिलवाड़ करने वालों को रावण जैसी दुर्गति भुगतनी होगी।

सीएम योगी बोले...नया भारत नई ऊंचाइयां छू रहा

लेजर शो के बाद सीएम योगी ने लोगों को संबोधित किया। कहा कि जिस भारत को कभी अविश्वास,अराजकता,आतंकवाद,नक्सलवाद और भ्रष्टाचार का पर्याय माना जाता था,उसकी तस्वीर पिछले 12 साल में बदल गई है। उन्होंने कहा...नया भारत विकास की नई ऊंचाइयों को छू रहा है। सरकार बिना किसी भेदभाव के योजनाओं का लाभ देश के एक-एक नागरिक तक पहुंचा रही है। आज का भारत आतंकवाद को नेस्तनाबूद कर रहा है, नक्सलवाद को खत्म कर रहा है।

उपराष्ट्रपति बोले...पहले यूपी आने पर सुरक्षित महसूस नहीं करता था

उपराष्ट्रपति सीपी राधाकृष्णन ने कहा कि हिंदू धर्म में सभी को समान माना जाता है। महर्षि वाल्मीकि भी एक सामान्य परिवार से आते थे,लेकिन उन्होंने रामायण की रचना की। उपराष्ट्रपति ने उत्तर प्रदेश की कानून-व्यवस्था का जिक्र करते हुए कहा कि पहले जब वह यूपी आते थे तो खुद को सुरक्षित महसूस नहीं करते थे,लेकिन अब प्रदेश सुरक्षित हाथों में है। उन्होंने काशी में हुई एक मुलाकात का किस्सा सुनाते हुए कहा कि हाल ही में उन्होंने एक व्यक्ति से पूछा कि क्या अब कोई समस्या है? इस पर उस व्यक्ति ने बताया कि अब कोई समस्या नहीं है। पहले वह छोटे-मोटे अपराध करता था, लेकिन योगी सरकार आने के बाद अब अपना व्यापार कर रहा है। उपराष्ट्रपति सीपी राधाकृष्णन ने कहा कि बहुत लंबे समय बाद कोई संत किसी राज्य का मुख्यमंत्री बना है। उन्होंने कहा कि वह भी बेहद सामान्य परिवार से आते हैं, इसके बावजूद देश के उपराष्ट्रपति बने। यह सब कैसे संभव हुआ,यह भारत की व्यवस्था और परंपरा को दर्शाता है। राम मंदिर के निर्माण के लिए अनेक कारसेवकों ने बलिदान दिया। उनके संघर्ष के बाद आज यह मंदिर बना है।

फरीदाबाद में टेक महिंद्रा के एशिया हेड की गोली मारकर हत्या

फरीदाबाद,07 नवम्बर 2026। हरियाणा के फरीदाबाद जिले के सेक्टर-21सी में पार्किंग विवाद को लेकर टेक महिंद्रा कंपनी के एशिया हेड परमजीत धनखड़ की गोली मारकर हत्या कर दी गई। आरोप है कि उनके पड़ोसी मोनू शर्मा ने अपनी लाइसेंसी पिस्टल से उन पर करीब 15 राउंड फायरिंग की। परमजीत को नौ गोलियां लगीं और उनकी मौके पर ही मौत हो गई। पुलिस के मुताबिक, दोनों परिवारों के बीच कुत्ते को पार्किंग में शौच कराने और गाड़ी खड़ी करने को लेकर लंबे समय से विवाद चल रहा था।

पीएम मोदी ने देशवासियों को दिवाली की शुभकामनाएं दीं

कहा...इस बार भी जवानों के साथ त्योहार मनाऊंगा

नई दिल्ली,07 नवम्बर 2026। पीएम मोदी ने इंस्टाग्राम पर रील शेयर करके दीपावली की शुभकामनाएं दी हैं। उन्होंने बताया है कि हर साल की तरह इस साल भी वे दिवाली सेना के जवानों के बीच मनाएंगे। वे कहां जाएंगे, इसके बारे में कोई जानकारी नहीं दी। 2025 में पीएम मोदी ने गोवा में ढहस विक्रांत पर नौसैनिकों के बीच दिवाली मनाई थी। यहां उन्होंने करीब 40 मिनट की स्पीच दी थी।



पीएम बोले...आपका समय समृद्धि से भरा रहे

नमस्ते,दीपावली का पावन पर्व, पूरा देश रोशनी से जगमगा रहा है। प्रकाश का यह पर्व अंधकार के खिलाफ हमारे संकल्प का परिचय है। आप सबको दीपावली की बहुत-बहुत शुभकामनाएं,आपका ये पर्व आपका आगे का समय सब कुछ सुख-शांति और समृद्धि से भरा रहे। मैं भी आपकी तरह बड़े उत्साह से दीपावली मनाता हूं। और हर साल आप जानते हैं देश के वीर जवानों के बीच जाना मेरा नित्यक्रम है। इस बार भी जारी रहेगा। आप सबको दीपावली की बहुत-बहुत शुभकामनाएं। इससे पहले शनिवार सुबह को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने नई दिल्ली स्थित उपराष्ट्रपति भवन में उपराष्ट्रपति सीपी राधाकृष्णन से मुलाकात की। उन्होंने भगवान की आरती की, राधाकृष्णन ने उन्हें तिलक लगाया और उपहार दिए।

राष्ट्रपति ने दीपावली की पूर्व संध्या पर देशवासियों को दी शुभकामनाएं,पर्यावरण संरक्षण और सद्भाव का दिया संदेश

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने दीपावली की पूर्व संध्या पर देशवासियों को शुभकामनाएं देते हुए सभी के अच्छे स्वास्थ्य,सुख और समृद्धि की कामना की है। उन्होंने लोगों से पर्यावरण संरक्षण और आपसी सद्भाव बनाए रखने तथा भारतीय मूल्यों से प्रेरित युवाओं से विकसित भारत के निर्माण में उत्साहपूर्वक योगदान देने का आह्वान किया है। राष्ट्रपति ने अपने संदेश में भारत और विदेशों में रह रहे सभी भारतीयों को दीपावली की हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं दीं। उन्होंने कहा कि दीपावली का आनंदमय उत्सव रावण पर विजय के बाद भगवान श्रीराम के अयोध्या लौटने से जुड़ा है। भगवान श्रीराम ने दीपों की सुंदर पंक्तियां देखी थीं। यही दीपावली का सांस्कृतिक और आध्यात्मिक महत्व है। यह पर्व रामराज्य के शुभारंभ का भी प्रतीक है। मुर्मु ने कहा कि दीपावली का पर्व सद्गुणों की नकारात्मक प्रवृत्तियों पर विजय का प्रतीक है। यह दुखों के अंत और आनंदमय एवं समृद्ध जीवन की शुरुआत का भी संदेश देता है। इस अवसर पर लोग शुभारंभ और कल्याण के लिए भगवान गणेश तथा समृद्धि के लिए माता महालक्ष्मी की पूजा करते हैं और सभी के सुख की कामना करते हैं। राष्ट्रपति ने अपने संदेश में कहा कि वह देश के प्रत्येक नागरिक के अच्छे स्वास्थ्य,सुख और समृद्धि की कामना करती हैं।



12 वर्षों में लोकतंत्र और संवैधानिक संस्थाओं को पहुंचा भारी नुकसान,सुधार में लगेगा लंबा समय : सोनिया गांधी

नई दिल्ली,07 नवम्बर 2026। कांग्रेस संसदीय दल की अध्यक्ष सोनिया गांधी ने केंद्र की मोदी सरकार पर निशाना साधते हुए आरोप लगाया है कि पिछले 12 वर्षों में देश के लोकतांत्रिक ढांचे,संवैधानिक संस्थाओं और सामाजिक ताने-बाने को भारी नुकसान पहुंचा है। उन्होंने कहा कि मौजूदा सरकार के सत्ता से जाने के बाद भी लोकतांत्रिक व्यवस्था और संस्थाओं को दोबारा मजबूत करने में लंबा समय लगेगा। इसके लिए सभी राजनीतिक दलों को गंभीरता से मिलकर प्रयास करने होंगे।

सोनिया गांधी ने अपनी आगामी पुस्तक 'बिलॉन्गिंग : अ जर्नी ऑफ लव' के प्रकाशन से पहले एक अंग्रेजी अखबार को दिए साक्षात्कार में ये विचार व्यक्त किए। हार्परकॉलिन्स इंडिया द्वारा प्रकाशित यह पुस्तक 10 नवंबर को बाजार में आएगी, जबकि इसका औपचारिक लोकार्पण 16 नवंबर को होगा। पुस्तक में उन्होंने अपने निजी जीवन,भारत से जुड़ाव,राजनीतिक सफर,कांग्रेस की भूमिका और देश के मौजूदा राजनीतिक हालात पर विचार साझा किए हैं। उन्होंने कहा कि अब देश के लोगों को लोकतांत्रिक संस्थाओं और व्यवस्था को हुए नुकसान का एहसास होने लगा है। हालांकि,तमाम चुनौतियों के बावजूद वह देश के भविष्य को लेकर आशावादी हैं।



विदेशी मूल के मुद्दे से पहुंचा था गहरा आघात

सोनिया गांधी ने वर्ष 1999 में कांग्रेस के तत्कालीन नेताओं शरद पवार,पीए संगमा और तारिक अनवर की ओर से उनके विदेशी मूल का मुद्दा उठाए जाने के घटनाक्रम को भी याद किया। उन्होंने कहा कि साथियों के इस रुख से उन्हें गहरा दुःख पहुंचा था। उन्हें विश्वास था कि उनके सहयोगी उन पर भरोसा करते हैं,लेकिन बाद में उन्हें महसूस हुआ कि ऐसा नहीं था। उन्होंने बताया कि उस बैठक में यह जानकर उन्हें धक्का लगा कि कुछ नेता उन्हें अब भी बाहरी मानते हैं। उस समय उनकी आंखों में आंसू आ गए थे और वह बैठक छोड़कर बाहर चली गई थीं।

वायुसेना का गजराज 13 हजार फीट की ऊंचाई पर उतरा

दुनिया का सबसे ऊंचा एयरबेस,लद्दाख की यह जगह चीन सीमा से 23 किलोमीटर दूर

नई दिल्ली,07 नवम्बर 2026। भारतीय वायुसेना ने शनिवार को अपने भारी मालवाहक विमान आईएल-76 एमडी की लद्दाख के न्योमा एयरबेस पर लैंडिंग करवाई। यह लैंडिंग 13,629 फीट की ऊंचाई पर हुई, जो दुनिया का सबसे ऊंचा एयरबेस है। इस विमान की दुनिया के सबसे ऊंचे एयरबेस पर लैंडिंग हुई। न्योमा को मुध-न्योमा भी कहते हैं। यह पूर्वी लद्दाख में है और चीन बॉर्डर से सिर्फ 23 किमी दूर है। नवंबर 2025 में न्योमा को अपग्रेड करके नया एयरबेस बनाया गया था। तब तत्कालीन एयर चीफ मार्शल एपी सिंह ने सी-130जे से उतरकर इसका उद्घाटन किया था। आईएएफ के मुताबिक यह दुनिया का सबसे ऊंचा फाइटर-कैपेबल एयरफील्ड है। मतलब साफ है-अब भारत,चीन बॉर्डर के बिल्कुल पास भारी हथियार,गाड़ियां और बड़ी संख्या में सैनिक बहुत तेजी से पहुंचा सकता है। हालांकि,न्योमा पर पहले भी लैंडिंग हुई है। 20 अगस्त 2013 को सी-130जे ने वहां 16,614 फीट पर लैंड किया था, वो उस विमान का रिकॉर्ड था। अब आईएल-76एमडी (गजराज) का रिकॉर्ड बना है। दोनों अलग-अलग विमान हैं।



कैंसर की 1000 से ज्यादा दवाइयां होंगी सस्ती,9 नवंबर से लागू होंगी नई कीमतें

नई दिल्ली,07 नवम्बर 2026। कैंसर का इलाज करा रहे मरीजों के लिए राहत भरी खबर है। केंद्र सरकार ने कैंसर के इलाज में इस्तेमाल होने वाली 1000 से ज्यादा ब्रांड की दवाइयों की कीमतें कम कर दी हैं। नई कीमतें 9 नवंबर 2026 से लागू होंगी। राष्ट्रीय औषधि मूल्य निर्धारण प्राधिकरण के अनुसार,अब तक 76 दवा कंपनियों ने 1225 दवाइयों की नई कीमतों की जानकारी दी है। इनमें से 1031 दवाइयों के दाम कम हुए हैं। करीब 600 ब्रांड की कीमतों में 50 फीसदी से ज्यादा की कटौती की गई है। कुछ दवाइयों के दाम तो 96.45 फीसदी तक घटे हैं। सरकार का अनुमान है कि दवाइयों की कीमतें कम होने से मरीजों को हर साल करीब 3502 करोड़ रुपये की बचत होगी। नई कीमतों के अनुसार,ब्रिक्सटा इंजेक्शन की कीमत 25,995 रुपये से घटाकर 3,318 रुपये कर दी गई है। अबीरोन दवा अब 41,250 रुपये की जगह 3,218 रुपये में मिलेगी।

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने बागडोगरा एयर फोर्स स्टेशन पर सैनिकों के साथ मनाई दिवाली

अनुशासन ही सामान्य सैनिक को असाधारण योद्धा बनाता है : राजनाथ सिंह

सिलीगुड़ी,07 नवम्बर 2026। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने शनिवार को दीपावली के अवसर पर बागडोगरा वायुसेना स्टेशन पहुंचकर भारतीय वायुसेना के जवानों को त्योहार की शुभकामनाएं दीं। इस दौरान उन्होंने जवानों का मुंह मीठा कराया और उनके साथ दीपावली की खुशियां साझा कीं। उन्होंने जवानों के साहस,कर्तव्यनिष्ठा और अनुशासन की सराहना करते हुए कहा कि प्राकृतिक आपदाओं के दौरान लोगों की मदद से लेकर देश की सुरक्षा तक,हर मोर्चे पर भारतीय वायुसेना का योगदान सराहनीय और देश के लिए गर्व का विषय है। जवानों को संबोधित करते हुए रक्षा मंत्री ने कहा कि भारतीय वायुसेना के वीर जवानों का साहस और समर्पण न केवल देश में,बल्कि पूरी दुनिया में पहचाना जाता है। विपरीत परिस्थितियों में देश की सुरक्षा सुनिश्चित करना हो या प्राकृतिक आपदाओं के दौरान राहत एवं बचाव कार्यों की जिम्मेदारी निभानी हो,वायुसेना के जवान हर चुनौती का सामना करने के लिए हमेशा तैयार रहते हैं। उनका समर्पण देश की सबसे बड़ी ताकत है। सशस्त्र बलों में अनुशासन के महत्व पर जोर देते हुए राजनाथ सिंह ने कहा कि तकनीक कितनी भी उन्नत क्यों न हो, सैनिकों में साहस और अनुशासन के बिना उसका कोई महत्व नहीं रह जाता। अनुशासन ही एक सामान्य सैनिक को असाधारण योद्धा बनाता है। उन्होंने कहा कि सैन्य क्षमता को मजबूत बनाने के लिए आधुनिक तकनीक के साथ-साथ सैनिकों में साहस,समर्पण और अनुशासन भी जरूरी है। रक्षा मंत्री ने ड्रोन और साइबर सुरक्षा जैसी आधुनिक तकनीकों में सशस्त्र बलों को और अधिक दक्ष बनाने पर जोर दिया। उन्होंने बताया कि जवानों को ड्रोन संचालन,साइबर सुरक्षा और युद्ध की बदलती रणनीतियों का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। भविष्य की चुनौतियों से प्रभावी ढंग से निपटने के लिए सशस्त्र बलों को आधुनिक तकनीक से लैस करना जरूरी है। उन्होंने विश्वास जताया कि जवानों के सहयोग और समर्पण से भारत इस दिशा में लगातार मजबूती से आगे बढ़ेगा। देश के रक्षा उत्पादन क्षेत्र में हो रही प्रगति का उल्लेख करते हुए राजनाथ सिंह ने कहा कि आत्मनिर्भर भारत की पहल से देश के स्टार्टअप और औद्योगिक संस्थान ड्रोन, एंटी-ड्रोन सिस्टम तथा सैनिकों के लिए आधुनिक उपकरण तैयार कर रहे हैं। उन्होंने स्वदेशी तकनीक से निर्मित रक्षा उपकरणों के विकास और उनके इस्तेमाल में भारतीय सशस्त्र बलों की भूमिका पर गर्व व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि घरेलू रक्षा उत्पादन को बढ़ावा देना देश की सामरिक क्षमता और आत्मनिर्भरता के लिहाज से महत्वपूर्ण है। इस दौरान रक्षा मंत्री ने जवानों को स्थानीय लोगों के साथ बेहतर संबंध बनाए रखने की सलाह भी दी। उन्होंने कहा कि सैनिकों के व्यवहार,वर्दी,बातचीत और संयम से स्थानीय लोगों के बीच सशस्त्र बलों की छवि बनती है। इसलिए जिस क्षेत्र में जवानों की तैनाती हो,वहां के लोगों के साथ सौहार्दपूर्ण संबंध बनाए रखना उनकी जिम्मेदारी है। राजनाथ सिंह ने कहा कि स्थानीय लोगों और सेना के बीच संबंध जितने मजबूत होंगे,दुश्मन की विभाजन कारी साजिशें उतनी ही कमजोर पड़ेंगी। बागडोगरा और आसपास के क्षेत्रों के लोगों में सेना के प्रति काफी सम्मान और प्रेम है। जवानों को अपने व्यवहार और कार्यों से इस विश्वास को लगातार बनाए रखना चाहिए।



कॉकरोच जनता पार्टी के मार्च में 'लेके रहेंगे आजादी' के नारे लगे

कोच्चि में दीपके बोले...पूरे देश में तिरंगा लेकर जाऊंगा,जहां चाहें,गिरफ्तार कर लें...

नई दिल्ली,07 नवम्बर 2026। कॉकरोच जनता पार्टी ने शनिवार को कोच्चि में वोटर लिस्ट में स्पेशल इंटेंसिव रिवीजन के खिलाफ प्रदर्शन किया। कॉकरोच जनता पार्टी फाउंडर अभिजीत दीपके और अभिनेता प्रकाश राज प्रदर्शन में शामिल हुए। प्रदर्शन मार्च मरीन ड्राइव से शुरू होकर राजेंद्र मैदान पहुंचा। जहां जनसभा में पहुंचे अभिजीत दीपके ने कहा कि गिरफ्तारी के बावजूद वे पूरे देश में तिरंगा लेकर जाना जारी रखेंगे। दीपके ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और बीजेपी पर आरोप लगाया कि वे लोगों की खान-पान की आदतों,निजी रिश्तों और वोट देने के अधिकारों को नियंत्रित करने की कोशिश कर रहे हैं। वहीं,एक्टर प्रकाश राज ने प्रदर्शनकारियों के साथ'हम लेके रहेंगे आजादी' के नारे लगाए। मैं नरेंद्र मोदी को बताना चाहता हूं कि मैं इस तिरंगे को हर जगह,इस देश के हर हिस्से में लेकर जाऊंगा। अगर आप मुझे गिरफ्तार करना चाहते हैं,तो आप मुझे दिल्ली, महाराष्ट्र, केरलम या तमिलनाडु में गिरफ्तार कर सकते हैं। मुझे देश के हर हिस्से से गिरफ्तार कीजिए,लेकिन मैं फिर वापस आऊंगा और इस तिरंगे को उठाऊंगा। उन्होंने पहले ये कंट्रोल करना चाहा कि आप क्या खाते हैं,फिर आप किससे शादी कर सकते हैं और किससे प्यार कर सकते हैं। अब वो उस बिंदु पर आ गए हैं जहां वो ये कंट्रोल करना चाहते हैं कि आप किसे वोट देते हैं। देश तीन नेताओं अंबेडकर,महात्मा गांधी और नेहरू के आदर्शों पर बना था। गांधी भारत की आत्मा,अंबेडकर रीढ़ और नेहरू उसका दिमाग हैं। मोदी का कद इन तीनों नेताओं से बड़ा होने का नहीं है। भले ही आप 120 साल तक सत्ता में रहें,आप कभी इनसे बड़े नहीं बन पाएंगे।



संपादकीय

बेलगाम हुआ प्रदूषण

आशा की जानी चाहिए कि दिल्ली-एनसीआर समेत उत्तर भारत के अन्य शहरों की प्रदूषण रोधी एजेंसियों के साथ स्थानीय निकाय और साथ ही पुलिस सुप्रीम कोर्ट की इस टिप्पणी को गंभीरता से लेगी कि प्रदूषण का प्रमुख कारण वाहनों से निकलने वाला धुआं है।सुप्रीम कोर्ट ने दिल्ली-एनसीआर में भारी ट्रैफिक जाम पर यह जो प्रश्न किया कि आखिर प्रदूषण नियंत्रित करने के लिए क्या कदम उठाए गए हैं,उसका अधिकारियों के पास शायद ही कोई ठोस उत्तर हो,क्योंकि तमाम उपायों के बाद भी उत्तर भारत में वायु प्रदूषण ने गंभीर रूप ले लिया है। यह एक त्रासदी ही है कि जब लोग सबसे बड़ा उत्सव मनाने जा रहे हैं,तब वे विषाक्त हवा से जूझ रहे हैं। दीवाली पर जब गरीबों को रोजी-रोटी कमाने का अतिरिक्त अवसर मिलता है,तब उन्हें जाम के कारण ऐसा करने में परेशानी उठाने के साथ घातक किस्म के प्रदूषण का भी सामना करना पड़ रहा है।इसका सामना अन्य लोग भी कर रहे हैं। जो स्थिति दिल्ली-एनसीआर में है,वही शेष उत्तर भारत में भी। अब तो उत्तर भारत के छोटे शहर भी प्रदूषण से त्रस्त रहने लगे हैं। ऐसा इसलिए हो रहा है,क्योंकि एक तो प्रदूषण रोधी सभी उपायों पर एक साथ काम नहीं किया जाता और दूसरे,तभी चेता जाता है,जब हवा विषैली हो जाती है।

वाहनों का धुआं,पराली दहन,कूड़ा-कर्कट जलना,सड़कों और निर्माण स्थलों से उड़ने वाली धूल की रोकथाम न करना प्रदूषण के मुख्य कारण हैं। समझना कठिन है कि ट्रैफिक जाम जैसे प्रदूषण के बड़े कारणों को दूर करने में भी शिथिलता क्यों दिखाई जा रही है? अनेक अध्ययन यह बता चुके हैं कि वायु प्रदूषण में वाहनों के उत्सर्जन की एक बड़ी भूमिका है। जब वाहन धीमी गति से चलते हैं,तो वे कहीं घातक किस्म का उत्सर्जन करते हैं। समस्या यह है कि उत्तर भारत का करीब-करीब हर शहर ट्रैफिक जाम से त्रस्त है। ट्रैफिक जाम का बड़ा कारण सड़कों पर अतिक्रमण है। सड़कों पर फुटपाथ या तो हैं नहीं और यदि हैं तो वे दुकानों में तब्दील हो चुके हैं। चूंकि इन दुकानों के सामने वाहन खड़े रहते हैं, इसलिए सड़कें और संकरी हो जाती हैं। इसके चलते वाहन रेंगने को बाध्य होते हैं और वे कहीं अधिक विषाक्त धुआं छोड़ते हैं। चूंकि इसकी कोई परवाह नहीं करता कि सड़कों पर अतिक्रमण न हो, फुटपाथों पर कब्जा न हो और आटो,रिक्शा,बस आदि जहां-तहां अपना स्टापेज न बना लें, इसलिए सड़कों पर अराजकता ही दिखाई देती है। यह त्योहारों पर और अधिक बढ़ जाती है। बढ़ते प्रदूषण पर चिंता जताते हुए सुप्रीम कोर्ट ने यह सही कहा कि कोई पाबंदी काम नहीं आएगी और हम जितने ज्यादा आदेश जारी करेंगे,उनके उल्लंघन के मामले उतने ही बढ़ेंगे।

दीपावली प्रदूषण के बारूद पर नहीं, पर्यावरण के उजास पर सजे दीपोत्सव

धुएं में न घुलें दीवाली की खुशियां


योगेश कुमार गोयल
नजफगढ़,नई दिल्ली

दीवाली,उजालों का त्योहार,खुशियों का स्वागत! लेकिन जब यही जश्न हमारी सांसों को घुटन से भर दे और हमारे वाता वरण को जहर बना दे,तब कहीं न कहीं हमारी संवेदनशीलता पर प्रश्न उठना स्वाभाविक है। सदियों से भारत में दीयों की रोशनी और हल्की आतिशबाजी के साथ दीपोत्सव मनाने की परम्परा रही है। यह उत्सव प्रतीक है बुराई पर अच्छाई की विजय का,अंधकार पर प्रकाश का,लेकिन पिछले कुछ दशकों में इसका स्वरूप इस कदर बदल गया है कि अब यह 'आतिशबाजी का युद्ध' प्रतीत होता है। जिस उत्सव की आत्मा प्रकाश और शांति में निहित थी,वह अब शोर,धुआं और प्रदूषण का पर्याय बन गया है। बीते वर्षों में अत्यधिक विस्फोटक पटाखों की भरमार ने इस पवित्र पर्व की सादगी को निगल लिया है। यही पटाखे वायु प्रदूषण को भयावह स्तर तक पहुंचाने और पहले से बिगड़ती पर्यावरणीय स्थिति को बेहद विकराल बनाने में बड़ी भूमिका निभाते हैं। तेज रोशनी वाले और बारूद से लबालब पारंपरिक पटाखे पलभर में न केवल जान-माल का भारी नुकसान कर डालते हैं बल्कि वायु,ध्वनि और मिट्टी, तीनों को गहराई से प्रदूषित करते हैं। इन पटाखों में बेरियम,कॉपर,गंधक,सीसा जैसे रासायनिक तत्व होते हैं,जो फूटने के बाद 100 घंटे तक वातावरण में घुले रहते हैं। बेरियम रेडियोधर्मी और विषैला होता है,कॉपर के यौगिक कैंसर का खतरा बढ़ाते हैं और गंधक श्वसन रोगों को जन्म देता है। पटाखों के धुएं में सल्फर डाइऑक्साइड,नाइट्रोजन ऑक्साइड,कार्बन मोनोऑक्साइड जैसी जहरीले गैसें होती हैं,जो फेफड़ों,दिल और आंखों पर सीधा प्रभाव डालती हैं। इनसे सिरदर्द,एलर्जी,खांसी, ब्रोंकाइटिस, न्यूमोनिया,अनिद्रा और यहां तक कि कैंसर जैसी असाध्य बीमारियों का खतरा बढ़ जाता है। ध्वनि प्रदूषण का खतरा भी कम नहीं है। कई स्थानों पर पटाखों की आवाज 130 से 150 डेसीबल तक पहुंच जाती है, जो कानों के लिए खतरनाक है। इससे बहरेपन, तनाव, नींद की कमी और हृदय की धड़कनों में असामान्यता जैसे रोग तेजी से बढ़ते हैं। मनुष्य ही नहीं,पशु-पक्षी और पालतू जानवर भी इस शोर और प्रदूषण से अत्यधिक प्रभावित होते हैं। शोध बताते हैं कि पटाखों की तीव्र ध्वनि कुत्तों सहित अन्य जीवों की सुनने की क्षमता को स्थायी रूप से क्षति पहुंचा सकती है। वायु प्रदूषण का एक और गंभीर प्रभाव पुरुषों के प्रजनन स्वास्थ्य पर देखा गया है। कुछ विशेषज्ञों के अनुसार, प्रदूषण के कारण वीर्य में शुक्राणुओं की संख्या में 40 प्रतिशत तक गिरावट दर्ज की गई है,


प्रतीकात्मक: दैनिक घटती-घटना

जिससे नपुंसकता का खतरा बढ़ रहा है। देश में हर दसवां व्यक्ति अस्थमा का शिकार है और प्रदूषित हवा गर्भ में पल रहे बच्चों तक के लिए खतरा बन चुकी है। ऐसे में,जब पहले से ही पराली, औद्योगिक धुआं,टूटी-फूटी सड़कों की धूल और निर्माण कार्यों के कारण हवा जहरीली हो चुकी हो,तब एक रात की अंधाधुंध आतिशबाजी इस संकट को और भयावह बना देती है।

सर्वोच्च न्यायालय ने पटाखों से होने वाले प्रदूषण की गंभीरता और पर्यावरण संरक्षण की अनिवार्यता को देखते हुए हरित पटाखों के इस्तेमाल तथा उनकी बिक्री को लेकर महत्वपूर्ण दिशा-निर्देश जारी किए हैं। अदालत ने स्पष्ट किया है कि स्वच्छ हवा और प्रदूषण नियंत्रण की जिम्मेदारी केवल दिल्ली-एनसीआर तक सीमित नहीं है,बल्कि यह पूरे देश का सामूहिक दायित्व है। न्यायालय ने हरित पटाखों के इस्तेमाल की अनुमति देते हुए उनकी गुणवत्ता, प्रमाणन और बिक्री पर कड़ी निगरानी रखने पर जोर दिया है। अदालत ने अपने 29 अक्तूबर के आदेश में कुछ अतिरिक्त और कड़े प्रावधान लागू किए हैं, जिसके तहत दिल्ली-एनसीआर में केवल उन्हीं हरित पटाखों के निर्माण और बिक्री की अनुमति दी गई है,जिन्हें वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद के राष्ट्रीय पर्यावरण अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान तथा पैट्रोलियम एवं विस्फोटक सुरक्षा संगठन से वैध प्रमाणन प्राप्त है और जो संस्थान की अधिकृत सूची में शामिल हैं। प्रत्येक पैकेट पर उत्पाद-विशिष्ट क्यूआर कोड अनिवार्य किया गया है,जिसके माध्यम से निर्माता, पंजीकरण,लाइसेंस और परीक्षण प्रमाणपत्र की प्रामाणिकता जांची जा सकेगी। बेरियम युक्त पटाखों तथा लड़ियों और पटाखों की मालाओं के निर्माण एवं बिक्री पर भी रोक लगाई गई है। अवैध पटाखों की बिक्री अथवा आदेशों के उल्लंघन पर लाइसेंस रद्द करने,पटाखे जब्त करने और दोषियों के विरुद्ध अभियोजन की कार्रवाई करने के निर्देश भी दिए गए हैं। अदालत ने यह भी स्पष्ट किया है कि केवल आदेश जारी करना पर्याप्त नहीं बल्कि उनका प्रभावी क्रियान्वयन और नागरिकों की जिम्मेदार भागीदारी भी उतनी ही आवश्यक है।

हालांकि सर्वोच्च न्यायालय के स्पष्ट आदेशों के अनुसार केवल हरित पटाखों के उपयोग की ही अनुमति है लेकिन विडंबना यह है कि प्रतिबंधों और दिशा-निर्देशों की खुलेआम धज्जियां उड़ाते हुए प्रदूषण फैलाने वाले पारंपरिक पटाखों की बिक्री बाजारों से लेकर गली-मोहल्लों तक धड़ल्ले से जारी रहती है। कानून और निर्णय केवल तभी सार्थक हैं,जब नागरिक भी अपनी जिम्मेदारी समझें। भारत में पहले से ही वायु एवं ध्वनि प्रदूषण नियंत्रण कानून लागू हैं लेकिन उनकी पालना सुनिश्चित करने में प्रशासन की उदासीनता अक्सर नजर आती है। पर्यावरणीय मामलों में केवल न्यायपालिका नहीं,जनता की भूमिका भी निर्णायक है। जब लोग ही संवेदनशील नहीं होंगे तो अदालतें भी पर्यावरण को अकेले नहीं बचा सकती। हमें यह समझना होगा कि दीवाली की असली सुंदरता पटाखों के धमाके में नहीं बल्कि दीयों की उजली लौ में है। यह वह पर्व है, जो हमारे मन, घर और समाज को प्रकाशमान करता है,न कि उन्हें धुएं से ढंक देता है। दीवाली पर साफ-सफाई की परंपरा रही है पर अब वही दिन कचरे,बारूद और प्लास्टिक की परतों में बदल जाता है। यह कैसा उत्सव है,जो हमारी सांसों को छीन लेता है? अब वक्त आ गया है कि हम अपनी परंपराओं को आधुनिक विवेक से जोड़ें। यदि हमें पटाखों का उपयोग करना है तो केवल हरित पटाखों का सीमित और नियंत्रित उपयोग करें। दीयों से घर-आंगन जगमगाएं, एक-एक पौधा लगाएं, बच्चों को सिखाएं कि असली रोशनी वही है,जो टिकाऊ हो,जो जीवन दे,न कि जहर घोले।

प्रदूषण के अंधकार में दीपावली की रोशनी कैसे मनाएं?


सौरभ वार्ष्णेय
उत्तमनगर,नई दिल्ली

आस्था,परंपरा और उत्सव के नाम पर क्या हम आने वाली पीढ़ियों की सांसों से समझौता कर सकते हैं? दिल्ली देश की राजधानी ही नहीं,बल्कि राजनीतिक, प्रशासनिक,आर्थिक और सांस्कृतिक गतिविधियों का एक बड़ा केंद्र भी है। यहां देश के कोने-कोने से लोग अपने सपनों को साकार करने आते हैं। दिल्ली-एनसीआर ऐसा क्षेत्र है,जहां हर कोई बेहतर भविष्य,रोजगार और जीवन की संभावनाएं तलाशता है। लेकिन विडंबना देखिए कि जिस शहर को लोग अपने सपनों का ठिकाना बनाना चाहते हैं,उसी शहर की हवा आज उनकी जिंदगी के लिए खतरा बनती जा रही है। प्रदूषण की मार ऐसी है कि खुले आसमान के नीचे सांस लेना भी किसी चुनौती से कम नहीं रह गया है। ऐसे में सवाल उठना स्वाभाविक है कि आखिर प्रदूषण के इस घुटन भरे माहौल में हम दीपावली का पर्व कैसे मनाएं?दीपावली भारतीय संस्कृति और परंपरा का ऐसा पर्व है,जिसका धार्मिक,आध्यात्मिक और सामाजिक महत्व सदियों पुराना है। यह अंधकार पर प्रकाश,असत्य पर सत्य और बुराई पर अच्छाई की विजय का प्रतीक है। मान्यता है कि चौदह वर्ष का वनवास पूरा करने के बाद भगवान श्रीराम जब माता सीता और लक्ष्मण के साथ अयोध्या लौटे थे,तब उनके स्वागत में अयोध्यावासियों सहित पूरे अखंड भारत ने घर-घर दीप जलाकर खुशियां मनाई थीं। तभी से दीपावली का पर्व प्रकाश और उल्लास के प्रतीक के रूप में मनाया जाता है। इस दिन मां लक्ष्मी की पूजा-अर्चना कर सुख,समृद्धि और खुशहाली की कामना भी की जाती है।लेकिन समय के साथ दीपावली मनाने के तौर-तरीकों में काफी बदलाव आया है। मिट्टी के दीपों, घरों की सजावट,पारिवारिक मेल-मिलाप और पारंपरिक मिठाइयों का स्थान धीरे-धीरे दिखावे और आतिशबाजी की प्रतिस्पर्धा ने ले लिया है। आसमान को रंग-बिरंगी रोशनी से भर देने की होड़ में हम यह भूल जाते हैं कि कुछ घंटों का हमारा मनोरंजन किसी दूसरे के लिए सांसों का संकट बन सकता है। हजारों की संख्या में छोड़े जाने वाले पटाखे वातावरण में जहरीले कण,धुआं और हानिकारक गैसें घोल देते हैं। इसका प्रभाव केवल दीपावली की रात तक सीमित नहीं रहता, बल्कि पहले से प्रदूषित हवा की स्थिति को और गंभीर बना देता है।

दिल्ली-एनसीआर की स्थिति इस लिहाज से विशेष चिंता का विषय है। यहां पहले ही वाहनों का धुआं, औद्योगिक उत्सर्जन,निर्माण कार्यों से उड़ती धूल,कूड़ा जलाने और आसपास के क्षेत्रों में पराली जलाने जैसे अनेक कारणों से वायु प्रदूषण का दबाव बना रहता है। ऐसे में आतिशबाजी इस संकट को और बढ़ाने का काम करती है। इसका सबसे अधिक खामियाजा बच्चों, बुजुर्गों,गर्भवती महिलाओं और सांस संबंधी समस्याओं से जूझ रहे लोगों को भुगतना पड़ता है। कई मासूम बच्चे ऐसी हवा में सांस लेने को मजबूर होते हैं,जो उनके स्वस्थ बचपन और बेहतर भविष्य के लिए खतरा बन सकती है। प्रदूषण केवल आंखों में जलन,खांसी या सांस फूलने तक सीमित नहीं है,बल्कि लंबे समय तक इसके संपर्क में रहने से हृदय और फेफड़ों से जुड़ी गंभीर बीमारियों का जोखिम भी बढ़ता है।

विडंबना यह है कि हम एक ओर मां लक्ष्मी से घर में सुख-समृद्धि और खुशहाली की प्रार्थना करते हैं, वहीं दूसरी ओर अपनी ही गतिविधियों से जीवन की सबसे अनमोल संपत्ति यानी स्वच्छ हवा को दूषित कर देते हैं। जिस दीपावली का उद्देश्य जीवन में प्रकाश और सकारात्मकता लाना है, क्या उसे धुएं और जहरीली हवा के बीच मनाना उचित है? क्या कुछ मिनटों की

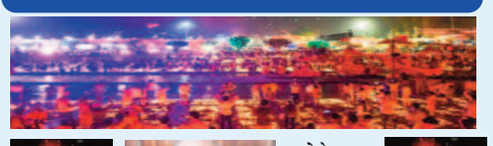


आतिशबाजी उन लोगों की तकलीफ से अधिक महत्वपूर्ण हो सकती है,जिन्हें प्रदूषण के कारण अस्पतालों का रुख करना पड़ता है? यहां यह समझना भी जरूरी है कि दीपावली पर पटाखे न चलाने की अपील किसी धार्मिक परंपरा या आस्था के विरोध में नहीं है। भारतीय संस्कृति तो प्रकृति को पूजने और उसके संरक्षण का संदेश देती रही है। हमारे पर्व और त्योहार भी प्रकृति के साथ सामंजस्य बनाकर जीवन जीने की प्रेरणा देते हैं। ऐसे में पर्यावरण की रक्षा करना हमारी धार्मिक और सामाजिक जिम्मेदारी का ही हिस्सा होना चाहिए। भगवान श्रीराम के आदर्शों में मर्यादा,करुणा,त्याग और लोककल्याण का विशेष स्थान है। उनके आगमन की खुशी में मनाए जाने वाले पर्व पर यदि हम किसी दूसरे के जीवन को संकट में डालें, तो हमें अपनी उत्सव परंपरा के वास्तविक उद्देश्य पर विचार करना चाहिए।

सरकार और न्यायालय समय-समय पर प्रदूषण को नियंत्रित करने के लिए कदम उठाते रहे हैं। पटाखों की बिक्री, उनके इस्तेमाल और ध्वनि प्रदूषण को लेकर दिशा निर्देश भी जारी किए जाते हैं। लेकिन केवल सरकारी आदेशों से इस समस्या का समाधान संभव नहीं है। जब तक नागरिक स्वयं अपनी जिम्मेदारी नहीं समझेंगे, तब तक प्रदूषण के खिलाफ लड़ाई अधूरी रहेगी। यह भी जरूरी है कि नियमों का पालन केवल कागजों तक सीमित न रहे। प्रशासन को अवैध पटाखों की बिक्री और प्रतिबंधित आतिशबाजी पर प्रभावी निगरानी रखनी चाहिए। साथ ही पर्यावरण के अनुकूल विकल्पों के प्रति जागरूकता बढ़ानी होगी।दीपावली की खुशी मनाने के लिए आतिशबाजी अनिवार्य नहीं है। हम मिट्टी के दीपक जलाकर,घरों को सजाकर,जरूरतमंद परिवारों की मदद करके,बच्चों को मिठाइयां बांटकर और परिवार के साथ समय बिताकर भी इस पर्व को यादगार बना सकते हैं। स्थानीय कुम्हारों से मिट्टी के दीप खरीदना न केवल हमारी परंपरा को जीवित रखेगा,बल्कि उनके रोजगार को भी सहारा देगा। सामूहिक रूप से दीपोत्सव आयोजित करना और पर्यावरण संरक्षण का संकल्प लेना इस पर्व को और अधिक सार्थक बना सकता है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि हमें अपनी आने वाली पीढ़ियों के बारे में सोचना होगा। क्या हम अपने बच्चों को ऐसा वातावरण देना चाहते हैं,जहां दीपावली के अगले दिन उन्हें स्वच्छ हवा के बजाय प्रदूषण की चादर मिले? क्या हम चाहते हैं कि त्योहारों की खुशी के बाद अस्पतालों में मरीजों की संख्या बढ़े? यदि नहीं, तो बदलाव की शुरुआत हमें स्वयं से करनी होगी।

दीपावली अंधकार को मिटाकर प्रकाश फैलाने का पर्व है। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम केवल अपने घरों को ही नहीं,बल्कि अपने विचारों को भी रोशन करें। आतिशबाजी के शोर और धुएं से ऊपर उठकर जीवन,स्वास्थ्य और प्रकृति को प्राथमिकता दें।आखिर त्योहार तभी सार्थक है,जब उसकी खुशियां सभी के हिस्से में आएं। इस दीपावली संकल्प लें कि घर-आंगन में दीप जलेंगे,लेकिन किसी की सांसों में धुआं नहीं भरेंगे। क्योंकि असली दीपावली वही है,जिसमें रोशनी भी हो,खुशहाली भी हो और हर किसी के हिस्से में स्वच्छ हवा भी आए।

दिवाली







प्रोफेसर
शाम लाल
कौशल
रोहतक
हरियाणा



दिवाली मनाने की खातिर
लोग घरों की पुताई करवा रहे हैं!
घरों में रंग रोगन करवा रहे है
एक दूसरे को मिठाइयां और दूसरे
तोहफे देकर मक्खन लगा रहे हैं!
रात को दिए और मोमबत्ती जला रहे हैं
लक्ष्मी और गणेश की पूजा कर रहे हैं
अपने आप को बहुत खुश दिखा रहे हैं
यह खुशी एक बनावटी मुखौटा है!
दिवाली का त्योहार केवल एक दिखावा है!
लोगों के मन के अंदर तनाव और नफरत है
अगर सच में खुशी से दिवाली मनानी हो
अपने मन से दूसरों के प्रति नफरत निकालो
दूसरों के साथ भेदभाव करके अच्छा बनना छोड़ो
दिवाली पर बर्बाद किया हुआ बड़ा पैसा गरीबों
और जरूरतमंदों की इच्छाओं पर खर्च करो!
दिवाली पर दिए जला के बाहर तो रोशनी होती है
लेकिन अब अपने मन में उजाला नहीं अंधेरा होता है
मन में रोशनी पैदा करना ही असली दिवाली मनाना है
एक दूसरे के साथ प्यार का व्यवहार करना ही दिवाली है
अपने अहंकार पर काबू करना ही सच्ची दिवाली है
रोते हुए चेहरे पर मुस्कुराहट लाना ही दिवाली है
दिवाली पर पैसा बर्बाद करने के बदले में किसी गरीब
की पढ़ाई के लिए खर्च करना है सच्ची दिवाली है!

दीपावली,दीपों का पर्व, संस्कृति की जीवंत परंपरा

भारत भूमि को यदि उत्सवों और पर्वों का देश कहा जाए, तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। यहाँ वर्ष के बारह महीनों में अनगिनत उत्सव मनाए जाते हैं,किंतु कार्तिक मास की अमावस्या को मनाया जाने वाला दीपावली (दिवाली) का पर्व केवल एक त्यौहार मात्र नहीं है,बल्कि यह भारतीय जनजीवन की संस्कृति,परंपरा, लोक-आस्था और राष्ट्र की सामूहिक चेतना का सबसे चमकीला हस्ताक्षर है। आज की भागदौड़ भरी आधुनिक ज़िंदगी में जब मनुष्य अपनी जड़ों से दूर होता जा रहा है, तब दीपावली जैसी प्राचीन परंपराएँ हमें हमारी मूल संस्कृति से जोड़कर मानवीय संवेदनाओं को जीवंत रखती हैंतमसो मा ज्योतिर्गमय–अर्थात् 'हमें अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलो' यह भारतीय मनीषियों का सनातन उद्घोष है। दीपावली इसी उद्घोष का जीवंत और व्यावहारिक रूप है। जब इस पावन संध्या पर घर-घर में दीप प्रज्वलित किए जाते हैं,तो वे केवल मिट्टी के दीये नहीं होते, बल्कि वे मनुष्य के भीतर छिपे अज्ञान,द्वेष,लोभ और अहंकार के अंधकार को मिटाकर ज्ञान,प्रेम और पवित्रता के प्रकाश को फ़ैलाने का प्रतीक बनते हैं।भारतीय संस्कृति में अग्नि और प्रकाश को पवित्रता,चेतना और ऊर्जा का सर्वोच्च स्त्रोत माना गया है। दीप प्रज्वलन की यह परंपरा हमें यह संदेश देती है कि चाहे रात कितनी भी गहरी और लंबी क्यों न हो,एक छोटा सा दीपक भी बड़े से बड़े अंधकार को चुनौती देने का सामर्थ्य रखता है। यह केवल एक बाहरी रोशनी नहीं, बल्कि अंतःकरण के प्रबोधन का उत्सव है। पत्र-पत्रिकाओं और ऐतिहासिक ग्रंथों में दीपावली के अनेक पौराणिक और सांस्कृतिक संदर्भ मिलते हैं,जो इसकी व्यापकता को दर्शाते हैं।भारत के लोक-मानस में यह पर्व मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम के चौदह वर्ष के वनवास के पश्चात लंका पर विजय प्राप्त कर अयोध्या लौटने की खुशी में मनाया जाता है। अयोध्या वासियों ने अपने प्रिय राजा के स्वागत में घी के दीये जलाए थे, जो आज भी हर घर में हर्षोल्लास के रूप में जीवित है।इस पावन रात्रि को धन, वैभव और ऐश्वर्य की देवी महालक्ष्मी और विघ्नहर्ता भगवान गणेश का पूजन किया जाता है। यह लोक-आस्था इस बात का प्रतीक है कि भौतिक समृद्धि के साथ-साथ बुद्धि,विवेक और सदाचरण का होना भी अनिवार्य है।देश के दक्षिणी अंचल में इसे नरकासुर वध के रूप में और जैन परंपरा में भगवान महावीर के निर्वाण दिवस के रूप में भी स्मरण किया जाता है।यह विविधता ही भारतीय समाज की सबसे बड़ी ताक़त है, जो विभिन्न आख्यानों को समेटे हुए संपूर्ण राष्ट्र को एक सांस्कृतिक धागे में पिरो देती है।पत्र-पत्रिकाओं के पन्नों पर जब हम दीपावली के सामाजिक स्वरूप का विश्लेषण करते हैं, तो पाते हैं कि यह भारतीय समाज की सामूहिक उपासना का पर्व है।

डॉ. मुश्ताक़ अहमद शाह सहज़
हरदा,मध्य प्रदेश

दीपावली गजल



बलजीत
सिंह
बेनाम
हाँसी
हरियाणा



जगमग जगमग दीप जलाएंगे हम भी!
घर से तम को दूर भगाएंगे हम भी!
सबके चेहरों पर मुस्कान सजा कर फिर!
खुशियों का त्यौहार मनाएंगे हम भी!
जीवन पर जब दुःख की आतिश फूटेगी!
संयम को हथियार बनाएंगे हम भी!
कर के पूजा श्रद्धा से माँ लक्ष्मी की!
मन में जो सोचा है पाएंगे हम भी!
नफ़रत की ज्वाला जब तक न बुझ जाए!
प्रेम के तब तक दीप जलाएंगे हम भी!

दीपों के उत्सव में श्रम की बूंदों को मिले उचित सम्मान

उल्लासित हो सर्वहारा वर्ग

भारत त्योहारों और पर्वों की भूमि हैद्य एक ऐसा देश,जहाँ ऋतुएँ बदलती हैं तो उनके साथ लोक-जीवन में उल्लास की नई धारा प्रवाहित हो उठती है। दीपावली


संजीव कुमार ठाकुर
रायपुर,छत्तीसगढ़

उत्सव दीपों और उजाले का का महापर्व अब केवल भारत देश में ही नहीं मनाया जाता बल्कि यह त्योहार अब वैश्विक स्तर पर उजाले के उत्सव के रूप में स्थापित हो चुका है। भारत का प्रत्येक उत्सव केवल आनंद का अवसर नहीं,बल्कि संस्कृति,श्रद्धा, कृतज्ञता और सामाजिक एकता का जीवंत प्रतीक है। इन्हीं पर्वों में दीपावली का स्थान सर्वोच्च और सर्वप्रिय है। आज दीपावली की ज्योति केवल भारत के आँगन में ही नहीं, बल्कि विश्व के अनेक देशों में प्रज्वलित होती है। अमेरिका,ब्रिटेन, कनाडा,फ्रांस,स्विट्ज़रलैंड,चीन,जापान जैसे देशों में बसे भारतीय समुदाय इसे पूरे श्रद्धा,स्नेह और संस्कारों के साथ मनाते हैं। अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन ने तो व्हाइट हाउस के द्वार दीपावली पर्व के लिए विशेष रूप से जनता हेतु खोल दिए और यह कहा कि–व्हाइट हाउस जनता का ही है,और दीपावली का यह उत्सव सबके लिए है। डोनाल्ड ट्रंप भी इस बात से छूट नहीं उन्होंने दिवाली के लिए विशेष व्यवस्था वाशिंगटन में रखने की विशेष निर्देश दिए हैं। ग्रेट ब्रिटेन में भी यह पर्व भारत की ही भाँति उल्लास, दीपमालाओं और पारंपरिक सज्जा के साथ मनाया जाता है।कार्तिक अमावस्या की रात को जब अनगिनत दीप अपने छोटे-से अस्तित्व से अंधकार को चुनौती



देते हैं, तब वह अमावस्या मानो शरद पूर्णिमा में रूपांतरित हो जाती है। यह दीपोत्सव केवल ज्योति का नहीं,आत्मा के आलोक का पर्व है। पौराणिक परंपरा के अनुसार,इसी दिन भगवान श्रीराम ने चौदह वर्ष के वनवास के पश्चात सीता एवं लक्ष्मण सहित अयोध्या लौटकर रावण पर विजय प्राप्त की थी। उनके स्वागत में सम्पूर्ण अयोध्या नगरी घी के दीपों से आलोकित हो उठी। इस विजयोत्सव के रूप में तब से यह पर्व अनवरत रूप से मनाया जाता है। एक अन्य कथा के अनुसार, समुद्र-मंथन के समय इसी दिवस पर देवी लक्ष्मी का प्रादुर्भाव हुआ था;अतःइस दिन लक्ष्मी पूजन का अत्यंत शुभ महत्व है।

दीपावली की रात जनमानस प्रतीक रूप में आशा और स्वागत की प्रतीक्षा में द्वार खुले रखते हैं,दीप जलाते हैं–मानो कह रहे हों,हे सौभाग्य,हे प्रकाश,हमारे घर में पधारो। व्यापारी समुदाय के लिए यह पर्व नववर्ष का आरंभ भी है। वे इस दिन अपने पुराने बही-खाते समाप्त कर नवीन लेखे आरंभ करते हैं – यह नवता, स्वच्छता और शुभारंभ का प्रतीक है।

वर्तमान संदर्भ में दीपावली का महत्व और भी व्यापक हो जाता है। यह दिन आर्य समाज के प्रवर्तक स्वामी दयानंद सरस्वती के निर्वाण दिवस के रूप में भी स्मरण किया जाता है। इसी प्रकार जैन धर्म के चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी का निर्वाण भी इसी पावन तिथि को हुआ था। अतः आर्य समाज तथा जैन समुदाय के लिए यह दिन श्रद्धा,साधना और प्रकाश का विशेष पर्व है। दीपावली केवल घरों की सजावट का त्यौहार नहीं यह शरीर, मन और आत्मा की स्वच्छता का पर्व है। इस दिन लोग अपने घरों की सफाई के साथ-साथ अंतःकरण के विकारों को भी धोने का प्रयास करते हैं। दीपों की लौ केवल दीवारों को नहीं,अंतरतम के अंधकार को भी आलोकित करती है। इसी उजास से उत्पन्न होती है सच्ची सम्पन्नता भौतिक नहीं, आध्यात्मिक।

बाजारों की रौनक, मिठाइयों की मिठास और स्वर्णाभूषणों की चमक से भी परे, दीपावली का वास्तविक अर्थ है आशा, करुणा और ज्ञान का प्रसार। यही कारण है कि यह पर्व राष्ट्र की आर्थिक चेतना के साथ-साथ सांस्कृतिक एकता का भी प्रतीक बन चुका है। धनतेरस से दीपावली तक करोड़ों-अरबों का व्यापार होता है, जिससे देश की अर्थव्यवस्था में भी नवोन्मेष का संचार होता है।

दीपावली का गूढ़ संदेश यही है –

दीप जलाना केवल
रोशनी करने का कार्य नहीं,
यह अंधकार से
संवाद करने की कला है।

इसी भाव को साकार करती पंक्तियां

आओ ज्ञान का दीप जलाएँ
अज्ञानता के घनघोर तमस में,
ज्ञान के सहस्त्र दीप जलाएँ,
दूर करें अंधियारा जगत से।
निराशा मन-मस्तिष्क से मिटाएँ,
आओ एक ज्ञान का दीप जलाएँ।

यही है दीपावली का सच्चा स्वरूप – अंधकार से प्रकाश की यात्रा, विकार से विचार की ओर प्रस्थान। आज यह पर्व केवल भारतीय सीमाओं तक सीमित नहीं रहा, बल्कि वैश्विक स्तर पर मानवता, सद्भाव और उजास का उत्सव बन चुका है।

दीपों की यह उजली भाषा,
मानवता का सच्चा आलोक है।
दीप जलें बाहर भी, भीतर भी।

सभी देशवासियों एवं समस्त विश्व को दीपावली की हार्दिक,मंगलमय एवं आलोकित शुभकामनाएँ।

सूचना

समाचार पत्र में छपे समाचार एवं लेखों पर सम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है। हमारा ध्येय तथ्यों के आधार पर सटिक खबरें प्रकाशित करना है न कि किसी की भावनाओं को ठेस पहुंचाना। सभी विवादों का निपटारा अम्बिकापुर न्यायालय के अधीन होगा।

सम्पादक

पहला कॉलम

मोबाइल हैक कर 99 हजार रुपए की ऑनलाइन ठगी

अंबिकापुर। दुकान संचालक से 99 हजार रुपए ठगी के मामले सामने आया है। पीड़ित दुकान संचालक ने मामले की रिपोर्ट कोतवाली में दर्ज कराई है। जानकारी के अनुसार महामाया मंदिर के पास रहने वाला अर्जुन कुमार नवापारा में महामाया बेल्ट कलेक्शन के नाम से दुकान चलाता है, उसका खाता सोनभद्र जिले के यूनियन बैंक में है और वह फोन-पे चलाता है। 31 अक्टूबर को वह सुबह 9 बजे दुकान गया था। रात करीब 8 बजे जब वह फोन-पे से अपने दोस्त को पैसा भेज रहा था तो लिमिट खत्म होने का मैसेज आया। शक होने पर जब उसने बैलेंस चेक किया तो खाते में 1 लाख 60 हजार दिखे, जबकि उसके खाते में 2 लाख 59 हजार होना चाहिए था। हिस्ट्री चेक करने पर आनन्द राजेन्द्रन के नाम पर 99 हजार का ट्रांसफर दिखा। इसके बाद वह गांधीनगर थाने पहुंचा और अज्ञात व्यक्ति द्वारा मोबाइल हैक करके रकम ट्रांसफर करने की 6 नवंबर को लिखित शिकायत दिया। पुलिस ने साइबर सेल की मदद से जांच शुरू कर दी है।

चाबी लगी स्कूटी हो गई चोरी,रिपोर्ट दर्ज

अंबिकापुर। शहर के व्यस्त खरसिया नाका क्षेत्र में स्थित बिरयानी दुकान के सामने से अज्ञात चोर ने स्कूटी वाहन पार कर दिया। जानकारी के मुताबिक,मोनिका तिर्की नामक युवती 6 नवंबर को दोपहर 1.30 बजे अपनी एक्टिवा से बहन प्रियंका को बस में बैठाने खरसिया नाका गई थी। बहन को बस में बैठाने के बाद वह मुरादाबादी बिरयानी दुकान के सामने अपनी स्कूटी खड़ी करके बिरयानी खाने चली गई और चाबी स्कूटी में ही लगाकर छोड़ दी थी। करीब 15-20 मिनट बाद जब वह वापस लौटी तो स्कूटी मौके पर नहीं थी। आसपास के दुकानों और मौजूद लोगों से पूछताछ करने के बाद भी कुछ पता नहीं चला। गांधीनगर पुलिस ने अज्ञात चोर के खिलाफ अपराध दर्ज कर लिया है और चोर का पता लगाने के लिए आसपास के सीसीटीवी खंगाल रही है।

छठ तालाब के पास से 360 मीटर बिजली केबल चोरी,विभाग को 98 हजार रुपए की क्षति

अंबिकापुर। शहर के गोधनपुर स्थित छठ तालाब के पास से अज्ञात चोरों ने बिजली विभाग की करीब 360 मीटर एलटी केबल चोरी कर ली। चोरी गई केबल की कीमत करीब 98 हजार रुपए बताई गई है। बिजली विभाग के अधिकारियों ने मामले में गांधीनगर थाने में शिकायत दर्ज कराई है। पुलिस के अनुसार, घटना 27 से 28 अक्टूबर के बीच केआर टेक्निकल कॉलेज के पीछे छठ तालाब के पास की है। 28 अक्टूबर को सुबह करीब 10 बजे मेंटेनेंस टीम ने केबल चोरी होने की सूचना विभाग को दी। मौके का निरीक्षण करने पर 9 स्पान (करीब 360 मीटर) केबल गायब मिली। इसके बाद सहायक यंत्री,जोन-2 अंबिकापुर ने अज्ञात आरोपियों के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज कर कार्रवाई के लिए पत्र भेजा। विभाग के अनुसार, चोरी गई केबल से किसी उपभोक्ता का कनेक्शन नहीं था। इसका उपयोग छठ पूजा कार्यक्रम के दौरान अस्थायी रूप से रोशनी की व्यवस्था के लिए किया जाता था। फ्लिहाल पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है।

कपड़ा दुकान से चोरी रिपोर्ट दर्ज

अंबिकापुर। लुंड्रा थाना क्षेत्र के मुख्य मार्ग में स्थित कपड़ा दुकान में घुसे चोर ने 10 हजार रुपये नकद पार कर दिया। दुकान के संचालक ने इसकी रिपोर्ट थाने में दर्ज कराई है। जानकारी के मुताबिक, ग्राम करांकी निवासी बैशाखू राम प्रधान का शौर्य कलेक्शन नामक दुकान है। वह रोज सुबह 8 बजे दुकान खोलता है और शाम को 7 बजे बंद कर देता है। 4 नवंबर को वह शाम 7.10 बजे दुकान बंद करके घर चले गया था। 5 नवंबर को सुबह जब दुकान खोला तो दराज खुला था और उसकी चाबी दराज के ऊपर ही रखी थी। दराज में रखे 10 हजार रुपये गायब थे। पीछे जाकर देखा तो छत के रास्ते से किसी के घुसने का निशान नजर आया। दुकान में लगे सीसीटीवी कैमरे को देखने पर एक अज्ञात व्यक्ति चोरी करते हुए दिखाई दिया, जिसका चेहरा अस्पष्ट था। शिकायत पर पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया है।

अज्ञात ने ट्रैक्टर में लगाई आग,अपराध दर्ज

अंबिकापुर। थाना क्षेत्र के ग्राम कतकालो डुमरपारा में किसान के ट्रैक्टर में आगजनी का मामला सामने आया है। जानकारी के मुताबिक, ओम प्रकाश यादव वर्ष 2025 में खेती के लिए सेकेंड हैंड महिंद्रा ट्रैक्टर खरीदा था। 25 अक्टूबर को वह अपना ट्रैक्टर लेकर खालपारा में धनसिंह और संतोष मांझी के यहां धान मिसाई करने गया था। रात 8 बजे घर लौटा और ट्रैक्टर को घर के पास खलिहान में खड़ा करके खाना खाकर करीब 10 बजे सो गया। रात करीब 12.30 बजे टायर फटने जैसी तेज आवाज आने पर वह बाहर आया तो ट्रैक्टर जल रहा था। गांव वालों के मदद से वह आग बुझाने की कोशिश किया लेकिन तब तक ट्रैक्टर पूरी तरह जल चुका था। आगजनी में किसान को करीब 5 लाख रुपये का नुकसान हुआ है। पुलिस ने जांच के बाद अज्ञात के खिलाफ अपराध पंजीबद्ध कर लिया है।

बच्चों के गले पर चाकू रखकर परिवार को दी थी जान से मारने की धमकी,घर से डेढ़ लाख रुपये नकद और मोबाइल लूटकर हुए थे फरार

200 से अधिक सीसीटीवी कैमरों के फुटेज ने खोला भटगांव लूटकांड का राज,चार पुरुषों सहित छह आरोपी गिरफ्तार

पुलिस ने 1.40 लाख रुपये नकद, सात मोबाइल,चाकू,चार स्टॉल और वारदात में प्रयुक्त स्विफ्ट डिजायर कार की जब्ती की

- संवाददाता -
सूरजपुर,07 नवम्बर 2026
(घटती-घटना)।



भटगांव थाना क्षेत्र के ग्राम अधिना सलका में घर में घुसकर बच्चों के गले पर चाकू रख परिवार को आतंकित करने और नकदी-मोबाइल लूटकर फरार होने की सनसनीखेज वारदात का पुलिस ने खुलासा किया है,पुलिस ने मामले में चार पुरुषों और दो महिलाओं सहित कुल छह आरोपियों को गिरफ्तार किया है,वारदात के बाद आरोपियों तक पहुंचने के लिए पुलिस ने 200 से अधिक सीसीटीवी कैमरों के फुटेज खंगाले। इसी दौरान एक संदिग्ध मारुति स्विफ्ट डिजायर कार पुलिस के रडार पर आई, वाहन के नंबर के आधार पर जांच आगे बढ़ी और पुलिस आरोपियों तक पहुंचने में सफल रही। गिरफ्तार आरोपियों के कब्जे से 1 लाख 40 हजार रुपये नकद,मोबाइल फोन, घटना में इस्तेमाल चाकू,मुंह बांधने के लिए उपयोग किए गए स्टॉल तथा वारदात में प्रयुक्त कार जब्त की गई है,पुलिस के अनुसार जब्त संपत्ति की कुल कीमत लगभग 4 लाख 60 हजार रुपये है।

बरामद संपत्ति की कुल कीमत करीब 4.60 लाख रुपये

आधी रात घर में घुसे थे नकाबपोश, बच्चों को बनाया था निशाना

पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार 27 अक्टूबर 2026 की रात करीब 1:30 बजे ग्राम अधिना सलका निवासी राधेश्याम सिंह, पिता स्वर्गीय चेतन,उम्र 35 वर्ष ने थाना भटगांव में रिपोर्ट दर्ज कराई थी, प्रार्थी के मुताबिक चार अज्ञात व्यक्ति उसके घर में घुसे। आरोपियों ने अपने चेहरे पर स्टॉल बांध रखे थे और चैनल का ताला खोलकर घर के भीतर प्रवेश किया था,घर में घुसते ही आरोपियों ने परिवार को धमकाना शुरू कर दिया,उन्होंने बच्चों के गले पर चाकू सटाकर जान से मारने की धमकी दी और घर में रखी अलमारी से 1 लाख 50 हजार रुपये नकद तथा ओप्पो कंपनी का मोबाइल फोन लूट लिया, वारदात को अंजाम देने के बाद आरोपी मौके से फरार हो गए,घटना की गंभीरता को देखते हुए पुलिस ने प्रार्थी की रिपोर्ट पर थाना भटगांव में अपराध क्रमांक 204/2026,धारा 309(6), 3(5) बीएनएस के तहत अपराध पंजीबद्ध कर विवेचना शुरू की।

200 से अधिक कैमरों की पड़ताल, स्विफ्ट डिजायर से मिला सुराग

घटना के बाद आरोपियों की पहचान और उनके भागने के रास्ते का पता लगाने के लिए पुलिस ने तकनीकी साक्ष्यों पर काम शुरू किया, पुलिस अधीक्षक सूरजपुर योगेश कुमार पटेल (भापुसे) के निर्देशन तथा अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक योगेश देवांगन और एसडीओपी प्रतापपुर अनूप एक्का के मार्गदर्शन में पुलिस टीम ने क्षेत्र के 200 से अधिक सीसीटीवी कैमरों के फुटेज की बारीकी से जांच की, फुटेज खंगालने के दौरान एक संदिग्ध मारुति स्विफ्ट डिजायर कार दिखाई दी, पुलिस ने वाहन के नंबर के आधार पर उसके संबंध में जानकारी जुटाई और संदिग्धों की पहचान की, इसके बाद पुलिस ने आरोपियों को हिरासत में लेकर पूछताछ की। पुलिस के अनुसार पूछताछ के दौरान आरोपियों ने अपने अन्य साथियों के साथ मिलकर वारदात को अंजाम देना स्वीकार किया।

चार पुरुष और दो महिलाएं गिरफ्तार, पुलिस ने इस मामले में जिन छह आरोपियों को गिरफ्तार किया है, उनके नाम और पते इस प्रकार हैं

1. हुलेश्वर दास, उम्र 35 वर्ष, निवासी ग्राम पोकसरी, थाना बतौली, जिला सरगुजा।
2. देवकरण दास उर्फविजय दास, उम्र 26 वर्ष, निवासी ग्राम जामडीह, थाना सीतापुर, जिला सरगुजा।
3. विकास दास, उम्र 23 वर्ष, निवासी ग्राम झरगांवा, थाना बतौली, जिला सरगुजा।
4. शांतुदास, उम्र 30 वर्ष, निवासी ग्राम झरगांवा, थाना बतौली, जिला सरगुजा।
5. शारदा चौहान, उम्र 37 वर्ष, निवासी तकिया रोड, अंबिकापुर, जिला सरगुजा।
6. सोनू कुमारी, उम्र 25 वर्ष, निवासी ग्राम खोरमा, प्रतापपुर, जिला सूरजपुर।

नकदी,मोबाइल,चाकू और कार जब्त

पुलिस ने गिरफ्तार आरोपियों के कब्जे से 1 लाख 40 हजार रुपये नकद,एक मोबाइल फोन,घटना में प्रयुक्त एक चाकू,विभिन्न कंपनियों के छह अन्य मोबाइल फोन तथा वारदात के दौरान चेहरे पर बांधे गए चार स्टॉल बरामद किए हैं,इसके अलावा घटना में प्रयुक्त मारुति स्विफ्ट डिजायर कार क्रमांक सीजी 10 एफए 6395 को भी जब्त किया गया है,इस प्रकार पुलिस ने नकदी,मोबाइल फोन,हथियार,अन्य सामग्री और वाहन सहित करीब 4 लाख 60 हजार रुपये की संपत्ति बरामद करने की जानकारी दी है,शिकायत में लूटी गई नकदी की राशि 1 लाख 50 हजार रुपये बताई गई थी, जबकि पुलिस ने 1 लाख 40 हजार रुपये नकद बरामद किए हैं।

नकदी,मोबाइल,चाकू और कार जब्त

पुलिस टीम की रही अहम भूमिका-इस कार्रवाई में थाना प्रभारी भटगांव बृजेश सिन्हा के साथ सुनील विवेकानंद सिंह, प्रधान आरक्षक सुशील मिश्रा,संजय कुमार,हेमंत सोनवानी तथा आरक्षक विनोद प्रताप सिंह, दिनेश ठाकुर और रजनीश पटेल की महत्वपूर्ण भूमिका रही, 200 से अधिक सीसीटीवी कैमरों के फुटेज की पड़ताल कर संदिग्ध वाहन तक पहुंचना और फिर उसके आधार पर आरोपियों की पहचान करना इस विवेचना का महत्वपूर्ण हिस्सा रहा। पुलिस की इस कार्रवाई से भटगांव क्षेत्र की चर्चित वारदात का खुलासा हुआ है,हालांकि,अब मामले में आरोपियों के विरुद्ध आगे की वैधानिक कार्रवाई और न्यायालयीन प्रक्रिया के जरिए आरोपों का परीक्षण होना शेष है।

माउंट आबू से आए बीके रूपेश भाई ने दो दिवसीय शिविर में दिए जीवन को श्रेष्ठ बनाने के सूत्र

- संवाददाता -
अंबिकापुर,07 नवम्बर 2026
(घटती-घटना)।



योग केवल एकांत में बैठकर ध्यान करने तक सीमित नहीं है, बल्कि दैनिक जीवन के कार्यों के बीच भी मन को परमात्मा से जोड़कर रखना ही सच्चा योग है। इससे जीवन में शांति, शक्ति और सकारात्मकता आती है। यह बातें ब्रह्माकुमारीज के अंतरराष्ट्रीय मुख्यालय माउंट आबू से आए राजयोग प्रशिक्षक बीके रूपेश भाई ने कहीं। वे चोपड़ापारा स्थित नव विश्व भवन में आयोजित दो दिवसीय योग साधना शिविर को संबोधित कर रहे थे। शिविर में शहर के करीब 500 लोगों ने हिस्सा लिया।

बीके रूपेश भाई ने कहा कि आज पूरी दुनिया योग की शक्ति को स्वीकार कर रही है। भारतीय संस्कृति की यह अमूल्य धरोहर व्यक्ति को तनावमुक्त और प्रसन्न जीवन जीने की प्रेरणा देती है। उन्होंने राजयोग की विशेष कमेंट्री और रचनात्मक अभ्यास के माध्यम से साधकों को आत्मिक शांति की अनुभूति कराई। उन्होंने बताया कि चलते-फिरते,कामकाज और पारिवारिक जिम्मेदारियों के बीच भी परमात्म स्मृति में रहकर योग का अभ्यास किया जा सकता है। उन्होंने प्रजापिता ब्रह्मा बाबा के जीवन से प्रेरणा लेते हुए पांच विशेष धारणाओं को अपनाने का आह्वान किया। इनमें ब्रह्ममुहूर्त में उठकर राजयोग करना, प्रतिदिन ईश्वरीय ज्ञान का श्रवण और मनन करना, शुद्ध एवं सात्विक भोजन ग्रहण करना, मन-वचन-कर्म से पवित्रता बनाए रखना तथा श्रेष्ठ विचार और कर्मों को जीवन का आधार बनाना शामिल है। उन्होंने कहा कि सत्संग, श्रेष्ठ विचार, शुभचिंतन और दूसरों के प्रति शुभभावना रखने से व्यक्ति नकारात्मकता और तनाव से दूर रह सकता है। अपनी शक्तियों और गुणों को विश्व कल्याण में लगाना तथा परिस्थितियों में भी समर्पण भाव बनाए रखना आंतरिक संतुष्टि और आत्मिक शक्ति प्रदान करता है। बीके रूपेश भाई ने कहा कि वर्तमान समय में दुनिया में चिंता, भय और अशांति का वातावरण है। प्राकृतिक आपदाओं की बढ़ती घटनाएं भी चिंता का विषय हैं। ऐसे समय में योगी आत्माओं की जिम्मेदारी है कि वे अपनी सकारात्मक सोच और योग शक्ति से वातावरण में शांति और पवित्रता का संचार करें।

महंगे होने के बावजूद स्वदेशी सजावटी सामान की मांग, मिट्टी के दीयों से रोशन होंगे घर



चाइनीज झालरों और सजावटी उत्पादों की बाजार में घटी मौजूदगी,दीपावली की खरीदारी के लिए उमड़ी भीड़ से स्थानीय कारोबारियों और कुम्हारों के चेहरे खिले

- संवाददाता -
अंबिकापुर,07 नवम्बर 2026
(घटती-घटना)।

दीपावली पर बाजार की रौनक इस बार कुछ बदले हुए अंदाज में नजर आ रही है। आकर्षक लाइटिंग और सजावटी सामान के बीच लोगों का रुझान स्वदेशी उत्पादों की ओर बढ़ा है। महंगे होने के बावजूद लोग भारतीय उत्पादों को प्राथमिकता दे रहे हैं। वहीं, आधुनिक रोशनी के बढ़ते चलन के बीच मिट्टी के दीयों की मांग भी बरकरार है। शनिवार को दीपावली की खरीदारी के लिए शहर के बाजारों में दिनभर भीड़ उमड़ी। लोगों ने घरों को सजाने के लिए झालर, रंग-बिरंगी लाइटें, पूजन सामग्री, मिट्टी के दीये और लक्ष्मी-गणेश की मूर्तियां खरीदीं। इस बार बाजार में चाइनीज सजावटी सामान पहले की तुलना में कम नजर आ रहा है। कारोबारियों के अनुसार,सजावटी सामान में भारतीय उत्पादों की उपलब्धता बढ़ी है। कीमत कुछ अधिक होने के बावजूद ग्राहक स्वदेशी सामान खरीदने में रुचि दिखा रहे हैं। झालर, लाइटिंग और घर सजाने के दूसरे सामानों की दुकानों पर ग्राहकों की भीड़ रही।

मिट्टी के दीयों से कुम्हारों के घर भी रोशन

दीपावली पर मिट्टी के दीयों का महत्व आज भी कायम है। घरों को आकर्षक लाइटों से सजाने के बावजूद लोग पूजा और दीप प्रज्ज्वलन के लिए मिट्टी के दीये खरीद रहे हैं। पिछले चार दिनों से दीयों की बिक्री अच्छी रही। इससे कुम्हारों के चेहरे पर भी मुस्कान नजर आई। लोगों ने मिट्टी के दीयों के साथ बाती और पूजन सामग्री की भी खरीदारी की।

पीजी कॉलेज मैदान में सजीं 200 से अधिक पटाखा दुकानें

दीपावली पर आतिशबाजी को लेकर भी बाजार तैयार है। शहर के पीजी कॉलेज मैदान में करीब 200 से अधिक पटाखा दुकानें लगाई गई हैं। पटाखा कारोबारियों ने पिछले तीन-चार दिनों से दुकानें सजानी शुरू कर दी थीं। हालांकि महंगाई का असर पटाखों की कीमतों पर भी पड़ा है। रविवार को दीपावली पर बड़े पैमाने पर आतिशबाजी होने की उम्मीद है।

बास्केटबॉल ग्राउंड में खिलाड़ियों ने बनाई रंगोली

दीपावली के अवसर पर गांधी स्टेडियम स्थित बास्केटबॉल ग्राउंड को भी आकर्षक ढंग से सजाया गया है। खिलाड़ियों ने फूलों और रंगोली से मैदान को सजाया। यहां दीपावली पर पूजा-अर्चना कर दीप प्रज्ज्वलित किए जाएंगे। इस दौरान प्रशिक्षक राजेश प्रताप सिंह सहित अन्य खिलाड़ी मौजूद रहेंगे।

गाय-बैलों को हडिया और घुघरी खिलाकर मनाया सोहराई पर्व, जूठा प्रसाद मानकर ग्रहण करते हैं परिवार के लोग

दीपावली के दूसरे दिन निभाई जाती है सदियों पुरानी परंपरा, पशुधन की पूजा से होती है पर्व की शुरुआत; सरगुजा की आदिवासी संस्कृति में खास महत्व

- संवाददाता -
अंबिकापुर, 07 नवम्बर 2026
(घटती-घटना)।



दीपावली पर जहां देशभर में लोग मां लक्ष्मी की पूजा-अर्चना कर सुख-समृद्धि की कामना करते हैं, वहीं सरगुजा संभाग के आदिवासी समाज में इस पर्व को मनाने की परंपरा कुछ अलग है। यहां दीपावली के दूसरे दिन गाय-बैलों की पूजा कर उन्हें पारंपरिक पेय हडिया और घुघरी खिलाई जाती है। खास बात यह है कि पशुओं को खिलाने के बाद बची हुई घुघरी और हडिया को परिवार के सदस्य व मेहमान प्रसाद के रूप में ग्रहण करते हैं। आदिवासी समाज में इसे पशुधन के प्रति सम्मान और आभार व्यक्त करने की परंपरा के रूप में देखा जाता है।

उदय पंडो ने बताया कि पूर्वजों से चली आ रही इस परंपरा में सबसे पहले मुर्गी की पूजा कर लक्ष्मी पूजा की शुरुआत की जाती है। इसके बाद गाय-बैलों को घुघरी खिलाई जाती है। पशुओं को भोजन कराने के बाद परिवार के लोग उनके जूठे को आशीर्वाद स्वरूप ग्रहण करते हैं। मान्यता है कि पशुधन की कृपा और आशीर्वाद से घर-परिवार में सुख-समृद्धि बनी रहती है। इसके बाद पिछले आठ दिनों से तैयार किए जा रहे पारंपरिक पेय हडिया को गाय-बैलों को चखाया जाता है। पशुओं को खिलाने-पिलाने के बाद बचा हुआ हडिया और घुघरी घर के सदस्यों के साथ मेहमानों को भी परोसा जाता है।

पशुधन को समर्पित है यह पर्व

आदिवासी समाज की जीवनशैली में गाय-बैलों का विशेष महत्व है। खेती-किसानी से लेकर ग्रामीण अर्थव्यवस्था तक पशुधन की अहम भूमिका रही है। ऐसे में सोहराई के माध्यम से समाज पशुओं के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करता है। इस दिन सुबह गोशाला और पशुओं को साफ किया जाता है। गाय-बैलों को नहलाकर उनके शरीर पर तेल व घी लगाया जाता है और पारंपरिक तरीके से पूजा-अर्चना की जाती है। कई स्थानों पर घरों के आंगन और दरवाजों पर गाय के खुरों के निशान भी बनाए जाते हैं। इन्हें शुभता और समृद्धि का प्रतीक माना जाता है।

पटाखों के बजाय परंपराओं के साथ मनाते हैं पर्व

इस पर्व की एक और खासियत यह है कि इसमें पटाखे फोड़ने और आतिशबाजी की जगह पारंपरिक रीति-रिवाजों को महत्व दिया जाता है। कंदमूल और कोहड़ा (कद्दू) अर्पित कर पूजा-अर्चना की जाती है। कुछ क्षेत्रों में गुरु-शिष्य परंपरा का भी निर्वहन होता है। शिष्य अपने गुरु को कोहड़ा भेंट कर सम्मान प्रकट करते हैं। सरगुजा संभाग में आदिवासी समाज की यह परंपरा केवल धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि प्रकृति, पशुधन और पूर्वजों के प्रति सम्मान का प्रतीक है। बदलते समय के बावजूद ग्रामीण अंचलों में लोग अपनी इस सांस्कृतिक विरासत को पीढ़ी-दर-पीढ़ी आगे बढ़ा रहे हैं। सोहराई पर्व के जरिए नई पीढ़ी को भी अपनी जड़ों, लोक मान्यताओं और पारंपरिक जीवनशैली से



नाला नहीं,पानी नहीं...फिर 10 लाख की पुलिया क्यों? सड़क से तीन फीट ऊंचा निर्माण...तकनीकी औचित्य पर सवाल

कागजों में जरूरत,जमीन पर सवाल! कुशहा में 10 लाख की पुलिया की उपयोगिता कटघरे में...

विकास के नाम पर 10 लाख खर्च,जहां जलधारा नहीं वहां पुलिया खड़ी!

- राजन पाण्डेय -

कोरिया,07 नवम्बर 2026 (घटती-घटना)।

सरकारी धन से विकास कार्य कराने का उद्देश्य ग्रामीणों को बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध कराना और उनकी समस्याओं का समाधान करना होता है,लेकिन जब किसी निर्माण की वास्तविक उपयोगिता ही सवालों के घेरे में आ जाए,तो उसकी स्वीकृति से लेकर क्रियान्वयन तक की पूरी प्रक्रिया पर सवाल उठना स्वाभाविक है,कोरिया जिले के सोनहत विकासखंड अंतर्गत ग्राम पंचायत कुशहा में लगभग 10 लाख रुपये की लागत से बनाई जा रही पुलिया को लेकर ऐसी ही स्थिति सामने आई है,निर्माण स्थल की मौजूदा स्थिति को लेकर सवाल उठ रहे हैं कि जहां स्पष्ट नाला, जलधारा अथवा पानी के बहाव का रास्ता नजर नहीं आता, वहां आखिर किस आवश्यकता के आधार पर पुलिया का निर्माण कराया जा रहा है?

मामले की सबसे चौंकाने वाली बात यह बताई जा रही है कि निर्माणाधीन पुलिया मौजूदा सड़क के स्तर से लगभग ढाई से तीन फीट ऊंची दिखाई दे रही है,ऐसे में पुलिया की उपयोगिता,सड़क से उसका जुड़ाव और निर्माण के तकनीकी औचित्य को लेकर सवाल खड़े हो रहे हैं,यदि निर्माण का उद्देश्य आवागमन को सुगम बनाना है, तो सड़क के मौजूदा स्तर से इतनी अधिक ऊंचाई पर पुलिया बनाने का आधार क्या है? और यदि इसके दोनों ओर पहुंच मार्ग को ऊंचा किया जाना प्रस्तावित है,तो क्या इसकी व्यवस्था भी स्वीकृत योजना और बजट में शामिल है?

नाला और जलधारा का स्पष्ट रास्ता नहीं, फिर पुलिया की जरूरत क्यों?

पुलिया का निर्माण सामान्यतः नाले,बरसाती पानी की निकासी,प्राकृतिक जलधारा अथवा किसी अन्य अवरोध के ऊपर आवागमन बनाए रखने के लिए किया जाता है,लेकिन कुशहा में निर्माणाधीन पुलिया के स्थान पर पानी के स्पष्ट प्राकृतिक बहाव मार्ग की मौजूदगी को लेकर सवाल उठाए जा रहे हैं,यदि वास्तव में वहां नाला या जलनिकासी की ऐसी कोई स्थिति नहीं है,जिसके लिए पुलिया आवश्यक हो,तो यह जांच का विषय है कि निर्माण की आवश्यकता किस सर्वेक्षण और तकनीकी आकलन के आधार पर तय की गई,किसी भी सार्वजनिक निर्माण को स्वीकृति देने से पहले स्थल की भौगोलिक स्थिति,स्थानीय जरूरत,जलप्रवाह और प्रस्तावित निर्माण की उपयोगिता का आकलन किया जाना चाहिए,ऐसे में संबंधित विभाग को यह स्पष्ट करना होगा कि कुशहा में पुलिया निर्माण का मूल उद्देश्य क्या है और उस स्थान को ही निर्माण के लिए क्यों चुना गया?

सड़क नीचे,पुलिया ऊपर, आखिर किसके लिए बना रहे 10 लाख का ढांचा?

सड़क से ढाई-तीन फीट ऊंची पुलिया,जुड़ाव कैसे होगा?

निर्माण स्थल पर दिखाई दे रही पुलिया की ऊंचाई भी गंभीर सवाल खड़े कर रही है,बताया जा रहा है कि यह मौजूदा सड़क के स्तर से करीब ढाई से तीन फीट ऊंची है, यदि सड़क और पुलिया के बीच इतना अंतर है,तो सामान्य आवागमन के लिए दोनों ओर किस तरह का पहुंच मार्ग तैयार किया जाएगा? क्या सड़क को भी ऊंचा किया जाएगा या फिर पुलिया तक पहुंचने के लिए ढलान बनाई जाएगी? यदि दोनों ओर सड़क का समतलीकरण और उचित ढलान नहीं बनाया जाता,तो यह निर्माण आवागमन को सुगम बनाने के बजाय परेशानी का कारण बन सकता है,इसलिए यह देखना जरूरी है कि स्वीकृत ड्राइंग और डिजाइन में सड़क तथा पुलिया के स्तर का निर्धारण किस आधार पर किया गया है,मौके पर निर्माण की वास्तविक स्थिति और स्वीकृत डिजाइन का मिलान किए बिना इसकी तकनीकी उपयुक्तता पर अंतिम निष्कर्ष निकालना संभव नहीं है।

नाला गायब,पुलिया तैयार! कुशहा में निर्माण की तकनीकी स्वीकृति पर उठे सवाल

10 लाख रुपये की लागत, गुणवत्ता की जांच भी जरूरी

लगभग 10 लाख रुपये की लागत से हो रहे निर्माण में गुणवत्ता को लेकर भी सवाल उठाए जा रहे हैं, स्थानीय स्तर पर निर्माण सामग्री और कार्य की मजबूती को लेकर असंतोष की बातें सामने आ रही हैं, ऐसे में केवल निर्माण की बाहरी स्थिति देखकर गुणवत्ता का निष्कर्ष निकालने के बजाय तकनीकी परीक्षण कराया जाना आवश्यक है, निर्माण में इस्तेमाल की गई सीमेंट, रेत, गिट्टी और अन्य सामग्री निर्धारित मानकों के अनुरूप है या नहीं, इसकी जांच होनी चाहिए, साथ ही कंक्रीट की मजबूती, निर्माण की मोटाई, सरिया और अन्य तकनीकी पहलुओं का परीक्षण भी कराया जाना चाहिए, सरकारी निर्माण में केवल ढांचा खड़ा कर देना पर्याप्त नहीं है। उसकी मजबूती, टिकाऊपन और वास्तविक उपयोगिता सुनिश्चित करना भी उतना ही जरूरी है।

एस्टीमेट किसने बनाया, स्थल निरीक्षण किसने किया?

इस पूरे मामले में सबसे महत्वपूर्ण सवाल तकनीकी स्वीकृति और मैदानी निरीक्षण की प्रक्रिया को लेकर है, किसी भी पुलिया के निर्माण से पहले संबंधित तकनीकी अमले द्वारा स्थल का निरीक्षण किया जाता है और उसी के आधार पर एस्टीमेट, ड्राइंग तथा डिजाइन तैयार किए जाते हैं, ऐसे में यह जानना जरूरी है कि कुशहा में प्रस्तावित निर्माण का सर्वेक्षण किस अधिकारी या इंजीनियर ने किया? क्या स्थल पर पहुंचकर नाले अथवा जलनिकासी की वास्तविक स्थिति का आकलन किया गया था? क्या निर्माण की ऊंचाई और सड़क से उसके जुड़ाव को तकनीकी रूप से उचित पाया गया था? यदि मौके की वास्तविक स्थिति और स्वीकृत एस्टीमेट में अंतर है, तो इसकी जिम्मेदारी तय होनी चाहिए, यह भी जांचा जाना चाहिए कि निर्माण कार्य के दौरान संबंधित इंजीनियरों ने नियमित निरीक्षण किया या नहीं और अब तक कार्य की गुणवत्ता को लेकर कोई परीक्षण कराया गया है या नहीं।

जनता के 10 लाख रुपये दांव पर? कुशहा की पुलिया का औचित्य और गुणवत्ता जांच के घेरे में...

गांवों में मूलभूत जरूरतें अधूरी, निर्माण की उपयोगिता पर सवाल

ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी कई स्थानों पर सड़क, नाली, पुल-पुलिया और आवागमन जैसी बुनियादी सुविधाओं का अभाव है,बरसात के दिनों में अनेक गांवों के रास्ते बाधित हो जाते हैं और ग्रामीणों को छोटी-छोटी जरूरतों के लिए भी परेशानी उठानी पड़ती है, ऐसे में विकास के नाम पर खर्च होने वाली राशि का उपयोग प्राथमिकता और वास्तविक आवश्यकता के आधार पर होना चाहिए,यदि किसी स्थान पर पुलिया की वास्तविक जरूरत है, तो उसका निर्माण स्वागत योग्य है,लेकिन यदि निर्माण स्थल की परिस्थितियां ही उसकी उपयोगिता पर सवाल खड़े कर रही हैं,तो संबंधित विभाग का दायित्व है कि वह इन सवालों का तकनीकी तथ्यों के साथ जवाब दे,आखिरकार लगभग 10 लाख रुपये की यह राशि सार्वजनिक धन है,जिसका उपयोग जनहित में होना चाहिए।

पानी का रास्ता नहीं,फिर पुलिया का निर्माण क्यों? कुशहा में इंजीनियरों की भूमिका पर सवाल

स्वतंत्र तकनीकी जांच से खुलेगी निर्माण की वास्तविकता

कुशहा में उठे सवालों का समाधान केवल मौखिक जवाब या कागजी स्पष्टीकरण से नहीं होगा,इसके लिए जिला प्रशासन और संबंधित विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों को निर्माण स्थल का स्वतंत्र तकनीकी निरीक्षण कराना चाहिए,जांच में स्वीकृत एस्टीमेट, तकनीकी स्वीकृति,ड्राइंग-डिजाइन,माप पुस्तिका (एमबी), निर्माण सामग्री,गुणवत्ता परीक्षण और भुगतान संबंधी अभिलेखों का मिलान किया जाना चाहिए, साथ ही यह भी स्पष्ट किया जाना चाहिए कि पुलिया निर्माण की वास्तविक जरूरत क्या थी,स्थल का चयन किस आधार पर हुआ और सड़क से ढाई-तीन फीट ऊंचाई रखने के पीछे क्या तकनीकी कारण है। यदि जांच में निर्माण की उपयोगिता,गुणवत्ता या स्वीकृति प्रक्रिया में अनियमितता सामने आती है,तो जिम्मेदार अधिकारियों और संबंधित एजेंसी की जवाबदेही तय कर नियमानुसार कार्रवाई की जानी चाहिए,फिलहाल कुशहा की यह पुलिया सिर्फएक निर्माण कार्य नहीं, बल्कि सरकारी धन के उपयोग,तकनीकी निगरानी और विकास योजनाओं की जमीनी हकीकत से जुड़ा सवाल बन गई है, अब देखना होगा कि जिम्मेदार विभाग इन सवालों का जवाब दस्तावेजों और तकनीकी तथ्यों के साथ देता है या फिर यह मामला भी अन्य निर्माण कार्यों की तरह फाइलों में उलझकर रह जाता है।

धनतेरस पर पुलिस का अनमोल उपहार, 25 परिवारों को लौटाई मोबाइल की खुशियां

साइबर सेल की तकनीकी पड़ताल लाई रंग,3.50 लाख के 25 मोबाइल मालिकों को मिले वापस

- संवाददाता -

कोरिया,07 नवम्बर 2026 (घटती-घटना)।

धनतेरस का पर्व आमतौर पर नई वस्तुओं की खरीदारी और खुशियों के आदान-प्रदान का अवसर होता है, बाजारों में जहां लोग नए मोबाइल और अन्य सामान खरीदकर त्योहार की खुशियां मना रहे थे, वहीं कोरिया पुलिस ने उन लोगों के लिए धनतेरस को और खास बना दिया, जिनके मोबाइल फोन गुम हो गए थे, पुलिस ने तकनीकी प्रयासों से 25 गुम मोबाइल फोन खोजकर उनके वास्तविक मालिकों को वापस सौंपे,बरामद मोबाइल फोन की अनुमानित कीमत करीब 3 लाख 50 हजार रुपये बताई गई है, लंबे समय से अपने मोबाइल वापस मिलने की उम्मीद लगाए बैठे लोगों के लिए यह किसी त्योहार के उपहार से कम नहीं रहा।

साइबर सेल की तकनीकी पड़ताल से मिले 25 मोबाइल

पुलिस अधीक्षक हरीश राठौर के निर्देशन में कोरिया पुलिस की साइबर सेल ने गुम मोबाइल फोन की तलाश के लिए तकनीकी माध्यमों से लगातार प्रयास किए,अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक अभिषेक सिंह के मार्गदर्शन तथा उप पुलिस अधीक्षक आशा सेन, एसडीओपी मोहसिन खान और उप पुलिस अधीक्षक श्याम मधुकर के मार्गदर्शन में साइबर सेल प्रभारी मोहम्मद तालिब शेख के नेतृत्व में टीम ने गुम हुए मोबाइल फोन की जानकारी जुटाई और उन्हें ट्रेस करने की कार्रवाई की, लगातार प्रयासों के बाद टीम ने कुल 25 मोबाइल फोन बरामद किए,इन मोबाइलों की अनुमानित कीमत लगभग 3 लाख 50 हजार रुपये आंकी गई है, पुलिस ने सभी मोबाइल फोन उनके वास्तविक मालिकों को सौंपने की व्यवस्था की।



बाजार में नई खरीदारी के बीच पुलिस ने लौटाई पुरानी अमानत, 25 गुम मोबाइल बरामद

मोबाइल वापस मिलते ही चेहरों पर लौटी मुस्कान

धनतेरस के अवसर पर पुलिस अधीक्षक हरीश राठौर ने बरामद किए गए सभी 25 मोबाइल फोन उनके वास्तविक मालिकों को सुपुर्द किए,मोबाइल गुम होने के बाद कई लोगों को उसके वापस मिलने की उम्मीद नहीं रह गई थी,ऐसे में त्योहार के दिन अपना खोया हुआ मोबाइल वापस पाकर लोगों की खुशी देखते ही बनी,मोबाइल धारकों ने कोरिया पुलिस और साइबर सेल की टीम के प्रति आभार जताया,किसी के लिए मोबाइल केवल महंगा इलेक्ट्रॉनिक उपकरण नहीं, बल्कि रोजमर्रा के कामकाज, संपर्क, जरूरी दस्तावेजों और व्यक्तिगत जानकारी से जुड़ा महत्वपूर्ण साधन होता है, ऐसे में गुम मोबाइल की वापसी से संबंधित लोगों को आर्थिक राहत के साथ अपनी जरूरी सामग्री वापस मिलने का भरोसा भी मिला।

अपराध नियंत्रण के साथ नागरिकों की समस्याओं का समाधान भी पुलिस की जिम्मेदारी

कोरिया पुलिस की यह पहल बताती है कि पुलिस की भूमिका केवल अपराधियों की धरपकड़ और कानून-व्यवस्था बनाए रखने तक सीमित नहीं है,आम नागरिकों की छोटी-बड़ी समस्याओं का समाधान करना और उन्हें उनकी खोई हुई संपत्ति वापस दिलाने के लिए प्रयास करना भी पुलिस की जनसेवा का महत्वपूर्ण हिस्सा है, धनतेरस के अवसर पर 25 लोगों को उनके गुम मोबाइल लौटाकर पुलिस ने त्योहार की खुशियों में अपनी ओर से योगदान दिया, बाजार में खरीदे जाने वाले उपहारों से अलग, किसी की खोई हुई जरूरी वस्तु वापस मिलना भी बड़ी खुशी का कारण बन सकता है, कोरिया पुलिस की इस कार्रवाई ने इसी बात को सामने रखा।

मोबाइल गुम हो तो तत्काल करें शिकायत,साइबर ठगी पर1930 पर दें सूचना

कोरिया पुलिस ने नागरिकों से अपील की है कि मोबाइल फोन गुम होने पर तत्काल नजदीकी थाने में सूचना दें, इसके साथ ही भारत सरकार के CEIR पोर्टल www.ceir.gov.in पर मोबाइल को ब्लॉक कराने के लिए शिकायत दर्ज करें,ताकि उसके दुरुपयोग की आशंका को कम किया जा सके,यदि मोबाइल से संबंधित किसी प्रकार की साइबर ठगी होती है,तो बिना देर किए साइबर हेल्पलाइन नंबर 1930 पर संपर्क करें,कोरिया पुलिस ने नागरिकों को भरोसा दिलाया है कि आम लोगों की सुरक्षा, सेवा और विश्वास बनाए रखने के लिए पुलिस सदैव तत्पर है।

CMYK



अब घर बैठे कटेगा धान खरीदी का टोकन

किसानों को समिति के चक्कर से मिलेगी राहत

10 नवंबर से शुरू होगी ऑनलाइन टोकन जारी करने की प्रक्रिया,15 नवंबर से 15 जनवरी तक धान बेच सकेंगे किसान

-ओंकार पाण्डेय-

सूरजपुर,07 नवम्बर 2026 (घटती-घटना)।

धान खरीदी के दौरान टोकन कटवाने के लिए खरीदी केंद्रों और समितियों में लगने वाली लंबी कतारों से किसानों को राहत देने के लिए इस बार डिजिटल व्यवस्था को बढ़ावा दिया जा रहा है,खरीफ विपणन वर्ष 2026-27 में किसान अब घर बैठे मोबाइल फोन के माध्यम से धान विक्रय के लिए टोकन प्राप्त कर सकेंगे,इसके लिए खाद्य,नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण विभाग ने 'तुहर टोकन' मोबाइल ऐप की सुविधा उपलब्ध कराई है, ऐप के माध्यम से किसान 24 घंटे अपनी सुविधानुसार ऑनलाइन टोकन प्राप्त कर सकेंगे। विभाग के अनुसार टोकन जारी करने की प्रक्रिया 10 नवंबर 2026 से शुरू होगी,किसान 15 नवंबर 2026 से 15 जनवरी 2027 तक की निर्धारित धान विक्रय तिथियों के लिए टोकन प्राप्त कर सकेंगे,इस व्यवस्था का उद्देश्य किसानों को टोकन के लिए बार-बार समिति पहुंचने की परेशानी से बचाना और धान खरीदी की प्रक्रिया को अधिक व्यवस्थित बनाना है।

जमीन के रकबे के हिसाब से मिलेगी टोकन की पात्रता-विभाग द्वारा निर्धारित नियमों के अनुसार किसानों को उनकी भूमि के रकबे के आधार पर टोकन प्राप्त करने की पात्रता तय की गई है,दो एकड़ तक भूमि वाले किसानों को एक टोकन,दो एकड़ से अधिक और दस एकड़ तक भूमि वाले किसानों को दो टोकन तथा दस एकड़ से अधिक भूमि वाले किसानों को अधिकतम तीन टोकन प्राप्त करने की पात्रता होगी, किसान पूर्व वर्ष की व्यवस्था के अनुरूप धान की मात्रा दर्ज कर टोकन प्राप्त कर सकेंगे,पात्रता के अनुसार दूसरे और तीसरे टोकन के माध्यम से शेष धान का विक्रय भी किया जा सकेगा।

डिजिटल सुविधा की सफलता क्रियान्वयन पर निर्भर-हालांकि मोबाइल ऐप से टोकन जारी करने की व्यवस्था किसानों के लिए सुविधाजनक साबित हो सकती है,लेकिन इसकी वास्तविक सफलता इस बात पर निर्भर करेगी कि ग्रामीण क्षेत्रों में किसानों को ऐप के उपयोग में कितनी आसानी होती है,इंटरनेट की उपलब्धता,मोबाइल संचालन की जानकारी और तकनीकी समस्याओं के समाधान की व्यवस्था भी महत्वपूर्ण होगी,समिति स्तर पर 30 प्रतिशत टोकन जारी करने का प्रावधान ऐसे किसानों के लिए राहत का विकल्प रहेगा,जिन्हें ऑनलाइन प्रक्रिया अपनाने में कठिनाई हो, अब देखना होगा कि 10 नवंबर से शुरू होने वाली टोकन व्यवस्था जिले के सभी खरीदी केंद्रों में कितनी सुचारु रूप से लागू होती है और किसानों को वास्तव में कतारों से कितनी राहत मिलती है।

70 प्रतिशत टोकन मोबाइल ऐप से,30 प्रतिशत समिति से

नई व्यवस्था में प्रत्येक धान खरीदी समिति की निर्धारित दैनिक खरीदी क्षमता का 70 प्रतिशत टोकन मोबाइल ऐप के माध्यम से जारी किया जाएगा,जबकि शेष 30 प्रतिशत टोकन समिति स्तर से किसानों को मिलेंगे,ऑनलाइन टोकन की निर्धारित सीमा में भी किसानों की श्रेणी के अनुसार व्यवस्था की गई है,इसके तहत 80 प्रतिशत टोकन लघु एवं सीमांत किसानों के लिए तथा 20 प्रतिशत टोकन बड़े किसानों के लिए आरक्षित रहेंगे,इस व्यवस्था से छोटे और सीमांत किसानों को टोकन प्राप्त करने में प्राथमिकता देने का प्रयास किया गया है,वहीं समिति स्तर पर टोकन जारी करने की व्यवस्था रखे जाने से उन किसानों को भी सुविधा मिलेगी, जिन्हें मोबाइल ऐप के उपयोग में परेशानी हो सकती है।

ओटीपी से होगा पंजीयन,गूगल प्ले स्टोर पर उपलब्ध ऐप

'तुहर टोकन' मोबाइल ऐप गूगल प्ले स्टोर पर उपलब्ध है,इसका उपयोग करने के लिए किसानों को सबसे पहले ओटीपी आधारित पंजीयन करना होगा, पंजीयन की प्रक्रिया पूरी होने के बाद किसान अपनी धान विक्रय की मात्रा दर्ज कर निर्धारित प्रक्रिया के अनुसार टोकन प्राप्त कर सकेंगे,डिजिटल व्यवस्था के तहत किसान अपनी सुविधा के अनुसार टोकन लेने की प्रक्रिया पूरी कर सकेंगे,इससे समिति में टोकन कटवाने के लिए लगने वाली भीड़ और अनावश्यक समय की बचत होने की उम्मीद है।

जशपुर में 13 एवं 14 नवंबर को जिला स्तरीय सरगुजा ओलम्पिक प्रतियोगिता का होगा आयोजन

प्रतियोगिता में 12 खेलों में प्रतिभागी दिखाएंगे अपनी खेल प्रतिभा,तैयारियों को लेकर बैठक आयोजित



-संवाददाता-

जशपुरनगर,07 नवम्बर 2026 (घटती-घटना)।

कलेक्टर रोहित व्यास के मार्गदर्शन में जिले में आगामी 13 एवं 14 नवंबर को जिला स्तरीय सरगुजा ओलम्पिक प्रतियोगिता का आयोजन किया जाएगा। प्रतियोगिता के सफल आयोजन को लेकर शुक्रवार को डिप्टी कलेक्टर ऋतुराज सिंह बेसेन ने कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में अधिकारियों की बैठक लेकर तैयारियों की समीक्षा की। जिला स्तरीय सरगुजा ओलम्पिक प्रतियोगिता का शुभारंभ 13 नवंबर को रणजीता स्टेडियम में होगा। प्रतियोगिता का समापन 14 नवंबर को किया जाएगा। प्रतियोगिता में कुल 12 प्रकार के खेल शामिल किए गए हैं, जिनमें खो-खो,हॉकी, कबड्डी सहित अन्य खेलों में खिलाड़ी अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करेंगे। प्रतियोगिता के प्रथम दिवस 13 नवंबर को 14 से 17 वर्ष आयु वर्ग के जूनियर खिलाड़ी शामिल होंगे। वहीं, 14 नवंबर को 18 वर्ष एवं उससे अधिक आयु वर्ग के खिलाड़ियों के लिए प्रतियोगिताएं आयोजित की जाएंगी। बैठक में डिप्टी कलेक्टर बेसेन ने आयोजन स्थल पर मैदान में पानी का छिड़काव, खिलाड़ियों के लिए भोजन एवं पेयजल की व्यवस्था,निर्बाध विद्युत आपूर्ति, यातायात व्यवस्था सहित अन्य आवश्यक सुविधाएं सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने प्रतियोगिता के सफल आयोजन के लिए सभी संबंधित अधिकारियों को समन्वय के साथ समय पर तैयारियां पूर्ण करने कहा।

कार्यक्रम स्थल पर चिकित्सा विभाग को डॉक्टरों की मेडिकल टीम के रखने के लिए कहा गया है। इस अवसर पर नगर पालिका, खाद्य विभाग,नगर सेना,स्वास्थ्य विभाग, पुलिस विभाग,खेल विभाग, शिक्षा विभाग,जनसंपर्क विभाग के अधिकारीगण उपस्थित थे।

मिट्टी को आकार देते-देते मंगल ने संवारा परिवार का भविष्य

हाथ के चाक से बिजली के चाक तक,मंगल प्रजापति की बदली जिंदगी

कुम्हार के हुनर को तकनीक का सहारा,अब दीयों के साथ चमक रहा परिवार का भविष्य

-संवाददाता-

सूरजपुर,07 नवम्बर 2026 (घटती-घटना)।

दीपावली की रोशनी में जब घर-आंगन मिट्टी के दीयों से जगमगाते हैं, तब उन दीयों के पीछे छिपी कुम्हारों की मेहनत और पीढ़ियों से चली आ रही पारंपरिक कला भी याद आती है,मिट्टी को आकार देकर लोगों के घरों में खुशियां और उजाला पहुंचाने वाले कारीगरों के लिए यह कला केवल व्यवसाय नहीं,बल्कि उनकी पहचान और आजीविका का आधार है, सूरजपुर जिले के भैयाथान विकासखंड अंतर्गत ग्राम पंचायत गंगोटी निवासी मंगल प्रजापति इसी परंपरा को आगे बढ़ाते हुए आत्मनिर्भरता की नई मिसाल पेश कर रहे हैं। मंगल प्रजापति पीढ़ियों से चली आ रही कुम्हार कला के माध्यम से मिट्टी के दीये, बर्तन और दैनिक उपयोग की अन्य सामग्री तैयार करते हैं,पहले वे हाथ से चलने वाले पारंपरिक चाक पर मिट्टी को आकार देते थे। इस प्रक्रिया में शारीरिक मेहनत अधिक लगती थी और उत्पादन भी सीमित रहता था, दिनभर काम करने के बाद भी उतनी सामग्री तैयार नहीं हो पाती थी,जिससे परिवार की आर्थिक जरूरतों को पूरा करना चुनौतीपूर्ण बना रहता था।

बिजली के चाक ने मेहनत घटाई,उत्पादन को दी नई गति-छत्तीसगढ़ शासन की योजना के अंतर्गत बिजली से चलने वाला चाक मिलने के बाद मंगल प्रजापति के पारंपरिक व्यवसाय में महत्वपूर्ण बदलाव आया,अब उन्हें मिट्टी के बर्तन तैयार करने में पहले की तुलना में कम शारीरिक मेहनत करनी पड़ती है,कम समय में अधिक सामग्री तैयार कर पाने से उनके काम की गति बढ़ी और व्यवसाय को विस्तार देने का अवसर मिला,आधुनिक तकनीक का यह सहयोग उनके लिए केवल एक उपकरण मिलने तक सीमित नहीं रहा,बल्कि इससे पीढ़ियों से चले आ रहे हुनर को नई संभावनाएं मिलीं,पारंपरिक कला को बरकरार रखते हुए अब वे तकनीक की मदद से अपने उत्पादन और बिक्री को बेहतर बनाने में सक्षम हुए हैं।

गांव से जिला मुख्यालय तक पहुंचा कारोबार-व्यवसाय में सुधार और उत्पादन बढ़ने के साथ मंगल प्रजापति ने सूरजपुर जिला मुख्यालय में अपनी दुकान भी स्थापित कर ली है, यहां वे नियमित रूप से मिट्टी के बर्तनों की बिक्री कर रहे हैं,पारंपरिक कुम्हार कला को बाजार से जोड़ने की उनकी यह पहल उनकी आजीविका को मजबूती देने के साथ उनके आत्मविश्वास को भी बढ़ा रही है।

बच्चों की पढ़ाई और परिवार के भविष्य को मिली नई उम्मीद-मंगल प्रजापति बताते हैं कि व्यवसाय में बढ़ोतरी से परिवार की आर्थिक स्थिति में सुधार आया है, अब वे बच्चों की शिक्षा और परिवार की आवश्यकताओं को पहले से बेहतर ढंग से पूरा कर पा रहे हैं,उनका एक बेटा महाविद्यालय में अध्ययनरत है,जबकि दूसरा बेटा भी दोबारा पढ़ाई शुरू करने के लिए इच्छुक है, बेहतर आर्थिक स्थिति ने उन्हें बच्चों के भविष्य को लेकर नई उम्मीद दी है,उनके लिए यह बदलाव केवल आमदनी बढ़ने की कहानी नहीं,बल्कि अपने परिवार को बेहतर अवसर देने और आने वाली पीढ़ी के भविष्य को संवारने का माध्यम भी है।

पारंपरिक हुनर को आधुनिक तकनीक का सहारा-मंगल प्रजापति का अनुभव बताता है कि यदि पारंपरिक कारीगरों को उनके काम के अनुरूप आधुनिक उपकरण और जरूरी सहयोग मिले तो सदियों पुरानी कला को नई पहचान मिल सकती है,बिजली से चलने वाले चाक ने उनकी मेहनत कम की, उत्पादन बढ़ाया और व्यवसाय को आगे बढ़ाने का रास्ता खोला,मंगल प्रजापति भावुक होकर कहते हैं कि बिजली से चलने वाला चाक मिलने के बाद उनका काम पहले से बेहतर हो गया है और परिवार की खुशहाली भी बढ़ी है,उन्होंने इस सहयोग के लिए मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के प्रति आभार व्यक्त किया,मिट्टी से दीये और बर्तन गढ़ने वाले मंगल प्रजापति आज अपने हुनर के साथ परिवार का भविष्य भी गढ़ रहे हैं,उनकी कहानी बताती है कि पारंपरिक कला को यदि आधुनिक तकनीक का साथ मिले तो मिट्टी के दीयों की रोशनी केवल घरों को ही नहीं,बल्कि कारीगरों के जीवन को भी रोशन कर सकती है।





कलेक्टर ने मिट्टी के दीये और झालर खरीदकर दिया स्थानीय हुनर को सम्मान

दीपावली पर स्व-सहायता समूहों और कुम्हार परिवारों के उत्पाद अपनाने की अपील,स्थानीय खरीदारी से मजबूत होगी छोटे कारोबारियों की आजीविका

-संवाददाता-
बैकुंठपुर (कोरिया),07 नवम्बर 2026
(घटती-घटना)।

दीपावली का पर्व केवल घरों को रोशनी से सजाने और खुशियां मनाने का अवसर नहीं, बल्कि उन हाथों को सम्मान देने का भी समय है, जिनकी मेहनत से हमारी परंपराएं और स्थानीय हुनर जीवित हैं,इसी संदेश के साथ कोरिया कलेक्टर श्रीमती रोक्तिमा यादव ने दीपावली की तैयारियों के बीच स्व-सहायता समूह द्वारा लगाए गए स्टॉल से मिट्टी के दीये और आकर्षक झालर खरीदकर स्थानीय उत्पादों को प्रोत्साहित किया। समाज कल्याण विभाग, बैकुंठपुर के सामने लगाए गए स्टॉल पर पहुंचकर उन्होंने खरीदारी की और जिलेवासियों से भी इस दीपावली स्थानीय कारीगरों तथा स्व-सहायता समूहों के उत्पादों को प्राथमिकता देने की अपील की। कलेक्टर यादव की यह पहल ऐसे समय में सामने आई है, जब दीपावली के अवसर पर बाजारों में सजावटी सामग्री, इलेक्ट्रॉनिक झालर और अन्य आधुनिक उत्पादों की मांग बढ़ जाती है, इस प्रतिस्पर्धा के बीच मिट्टी के दीये बनाने वाले कुम्हार परिवारों और स्थानीय उत्पाद तैयार करने वाले स्व-सहायता समूहों के सामने अपने उत्पादों को बाजार तक पहुंचाने की चुनौती रहती है,ऐसे में स्थानीय स्तर पर तैयार सामग्री की खरीदारी को बढ़ावा देना इन परिवारों की मेहनत को आर्थिक संबल देने का एक महत्वपूर्ण माध्यम बन सकता है।

जिलेवासियों को दी दीपावली की शुभकामनाएं-कलेक्टर श्रीमती यादव ने जिलेवासियों को दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं देते हुए सभी के जीवन में सुख, समृद्धि और खुशहाली की कामना की, उन्होंने किसानों, ग्रामीणों और समस्त नागरिकों से इस पर्व पर जिले के विकास में अपनी भागीदारी निभाने का संकल्प लेने की अपील की, उन्होंने कहा कि सभी के सहयोग और सहभागिता से कोरिया जिले को विकास की हर दिशा में आगे बढ़ाया जा सकता है, दीपावली पर कलेक्टर की इस पहल का संदेश स्पष्ट है कि त्योहार की असली खुशियां तभी व्यापक होंगी,जब उनकी रोशनी स्थानीय कारीगरों और मेहनतकश परिवारों के घरों तक भी पहुंचेगी, घरों में मिट्टी के दीये जलाने के साथ यदि स्थानीय उत्पादों को खरीदने की परंपरा भी मजबूत होती है, तो यह दीपावली छोटे कारोबारियों और स्व-सहायता समूहों के लिए भी खुशहाली का अवसर बन सकती है।

स्थानीय खरीदारी से कारीगरों की मेहनत को मिलेगा सम्मान

कलेक्टर श्रीमती यादव ने जिले एवं नगरवासियों से अपील की कि दीपावली पर स्व-सहायता समूहों और स्थानीय कुम्हार परिवारों द्वारा तैयार मिट्टी के दीये खरीदें,उन्होंने स्थानीय उत्पादों के उपयोग को प्रोत्साहित करते हुए कहा कि इससे इन परिवारों की मेहनत को सम्मान मिलेगा और उनकी आजीविका को सहयोग प्राप्त होगा, मिट्टी के दीये केवल दीपावली की परंपरा का हिस्सा नहीं हैं,बल्कि इनके निर्माण के पीछे कुम्हार परिवारों की पीढ़ियों से चली आ रही कला और मेहनत जुड़ी होती है,मिट्टी जुटाने से लेकर उसे आकार देने,सुखाने और पकाने तक की पूरी प्रक्रिया में समय और श्रम लगता है,त्योहार के मौसम में दीयों की बिक्री से इन परिवारों को अतिरिक्त आमदनी का अवसर मिलता है,वहीं स्व-सहायता समूहों के माध्यम से तैयार सजावटी सामग्री और झालर महिलाओं की आर्थिक गतिविधियों को आगे बढ़ाने का जरिया बनती हैं।

आधुनिक बाजार में परंपरागत उत्पादों को बनाए रखने की जरूरत

बदलते समय के साथ दीपावली की सजावट के तौर-तरीकों में भी बदलाव आया है, बाजार में बिजली से चलने वाली झालरों और आकर्षक सजावटी सामानों की भरमार है,लेकिन पारंपरिक मिट्टी के दीयों का अपना सांस्कृतिक महत्व आज भी कायम है, ऐसे में स्थानीय उत्पादों को अपनाने की अपील केवल खरीदारी तक सीमित नहीं है, बल्कि यह पारंपरिक कारीगरी को जीवित रखने और स्थानीय अर्थव्यवस्था को मजबूत करने का संदेश भी देती है,यदि त्योहारों के दौरान उपभोक्ता स्थानीय कुम्हारों और स्व-सहायता समूहों से सीधे उत्पाद खरीदते हैं,तो इसका लाभ स्थानीय स्तर पर ही पहुंचता है, इससे छोटे उत्पादकों को बाजार मिलता है और उनकी मेहनत का प्रतिफल भी सीधे उनके परिवारों तक पहुंचता है, स्थानीय खरीदारी की यह भावना ग्रामीण और शहरी अर्थव्यवस्था के बीच एक मजबूत संबंध स्थापित कर सकती है।



दीपावली पर्व के मद्देनजर खाद्य सुरक्षा विभाग की पत्थलगांव में कार्रवाई

6 खाद्य प्रतिष्ठानों का निरीक्षण,जांच के लिए मिठाई एवं अन्य खाद्य पदार्थों के 5 नमूने संकलित

-संवाददाता-
जशपुरनगर,07 नवम्बर 2026
(घटती-घटना)।

दीपावली पर्व के मद्देनजर आम नागरिकों को सुरक्षित एवं गुणवत्तापूर्ण खाद्य पदार्थ उपलब्ध कराने के उद्देश्य से खाद्य सुरक्षा विभाग द्वारा पत्थलगांव में खाद्य प्रतिष्ठानों का निरीक्षण किया गया। 6 नवंबर को की गई इस कार्रवाई के दौरान कुल 6 खाद्य प्रतिष्ठानों की जांच की गई तथा विभिन्न खाद्य पदार्थों के 5 नमूने संकलित कर जांच के लिए भेजे जा रहे हैं। खाद्य सुरक्षा विभाग की टीम द्वारा पत्थलगांव बस स्टैंड स्थित सेंट्रल रेस्टोरेंट,न्यू बालाजी रेस्टोरेंट,बालाजी फन टू रेस्टोरेंट, रायगढ़ चौक स्थित गोकुल रेस्टोरेंट,रायगढ़ रोड स्थित मां शारदा डेयरी तथा बस स्टैंड स्थित केक बेकरी का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान नारियल बर्फी,कलाकंद,बूंदी लड्डू, पनीर एवं भैंस के दूध से बने खोवा के नमूने संकलित किए गए। इन नमूनों को गुणवत्ता एवं खाद्य सुरक्षा की जांच के लिए भेजा जा रहा है। निरीक्षण के दौरान जिन खाद्य प्रतिष्ठानों में कमियां एवं अनियमितताएं पाई गईं,उन्हें सुधार नोटिस जारी किए जा रहे हैं। संकलित खाद्य नमूनों की जांच रिपोर्ट प्राप्त होने के बाद संबंधित खाद्य प्रतिष्ठानों के विरुद्ध नियमानुसार वैधानिक कार्रवाई की जाएगी। खाद्य सुरक्षा विभाग द्वारा त्योहारों के दौरान खाद्य पदार्थों की गुणवत्ता एवं सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए निरीक्षण और कार्रवाई लगातार जारी रहेगी।





उज्ज्वला योजना से रसोई के धुएं से मिली राहत मुख्यमंत्री ने पत्र लिखकर जाना परिवार का हाल

बच्चों की पढ़ाई और उज्ज्वल भविष्य की कामना की...

-संवाददाता-
कोरिया,07 नवम्बर 2026
(घटती-घटना)।

दीपावली का पर्व खुशियों,अपनत्व और उपहारों का प्रतीक है,ऐसे में जब किसी परिवार को प्रदेश के मुख्यमंत्री की ओर से आत्मीयता से भरा पत्र मिले,तो उसकी खुशी और भी खास हो जाती है,बैकुंठपुर विकास खंड के ग्राम भांडी निवासी श्रीमती चंदा पनिका के लिए इस बार दीपावली का एक यादगार उपहार डाक के माध्यम से पहुंचा, मुख्यमंत्री विष्णु देव साय की पाती पाकर चंदा की खुशी का ठिकाना नहीं रहा,उन्होंने भावुक होकर कहा कि यह पत्र उनके लिए दीपावली का बड़ा उपहार है।

राज्य स्थापना दिवस की शुभकामनाओं के साथ मुख्यमंत्री की ओर से भेजे गए इस पत्र में केवल औपचारिक बधाई ही नहीं, बल्कि चंदा के परिवार का कुशलक्षेम पूछते हुए उनके दैनिक जीवन,बच्चों की पढ़ाई और परिवार की खुशहाली की कामना भी की गई है,पत्र में मुख्यमंत्री ने प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना से चंदा के जीवन में आए बदलाव का उल्लेख करते हुए रसोई के धुएं से मिली राहत को महत्वपूर्ण बताया।

लकड़ी के चूल्हे से गैस कनेक्शन तक का सफर,रसोई में बदली जिंदगी-मुख्यमंत्री ने अपनी पाती में चंदा को संबोधित करते हुए उनके पुराने दिनों की परेशानी का जिक्र किया है,पहले लकड़ी के चूल्हे पर भोजन बनाने के दौरान धुएं का सामना करना पड़ता था, खाना तैयार करने में अधिक समय और मेहनत लगती थी,अब घरेलू गैस कनेक्शन मिलने से रसोई का काम पहले की तुलना में आसान हुआ है,भोजन जल्दी तैयार हो जाता है और बचा हुआ समय घर के दूसरे जरूरी कामों में लगाया जा सकता है, मुख्यमंत्री ने लिखा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने उज्ज्वला योजना के माध्यम से माताओं-बहनों को चूल्हे के धुएं से राहत दिलाने की पहल की है,इस सुविधा का वास्तविक महत्व वही महिलाएं समझ सकती हैं, जो प्रतिदिन परिवार के लिए रसोई संभालती हैं। चंदा के जीवन में आई यह सहूलियत उनके लिए संतोष का विषय है।



पति के परिश्रम और मां की मेहनत को भी पत्र में मिला सम्मान

मुख्यमंत्री ने पत्र में चंदा के पति डिपेन्द्र कुमार को भी शुभकामनाएं दीं,परिवार की जरूरतों को पूरा करने के लिए उनके परिश्रम और घर-परिवार की जिम्मेदारियां निभाने में चंदा के योगदान का उल्लेख करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि माता-पिता की मेहनत बच्चों के भविष्य की मजबूत नींव होती है,पत्र में यह आत्मीयता भी दिखाई देती है कि मुख्यमंत्री ने केवल योजना के लाभ तक बात सीमित नहीं रखी,बल्कि परिवार के सदस्यों का हाल जाना और उनके जीवन से जुड़े छोटे-छोटे पहलुओं को भी स्थान दिया।

बेटे अविक की पढ़ाई पूछी,नन्हे लक्ष्य को भेजा स्नेह-मुख्यमंत्री ने चंदा के बेटे अविक की पढ़ाई के बारे में जानकारी लेते हुए उसे मन लगाकर पढ़ने और खूब खेलने का संदेश दिया,वहीं छोटे बेटे लक्ष्य को स्नेह और आशीर्वाद भेजते हुए दोनों भाइयों के बीच प्रेम और आपसी सहयोग बनाए रखने की कामना की,बच्चों के भविष्य को लेकर मुख्यमंत्री ने लिखा कि उन्हें अच्छी शिक्षा मिले,वे अपनी रुचि और प्रतिभा को पहचानें तथा आत्मविश्वास के साथ अपने जीवन का रास्ता चुन सकें,विकसित भारत और विकसित छत्तीसगढ़ 2047 के संकल्प का उल्लेख करते हुए उन्होंने बच्चों को भविष्य में आगे बढ़ने और अपने सपनों को साकार करने के अवसर मिलने की कामना की।

घर की जिम्मेदारियों के बीच अपनी सेहत का भी रखें ध्यान- मुख्यमंत्री ने चंदा को यह संदेश भी दिया कि परिवार और घर की जिम्मेदारियों के बीच वे अपनी सेहत और आराम का ध्यान रखना न भूलें,ग्राम भांडी की अन्य बहनों और परिवारों को भी जोहार भेजते हुए उनके घरों में सुख-शांति, समृद्धि और बच्चों की हंसी-खुशी बनी रहने की शुभकामनाएं दीं।

एक पत्र ने बढ़ाया अपनत्व का एहसास-चंदा पनिका के लिए मुख्यमंत्री की यह पाती महज एक सरकारी पत्र नहीं,बल्कि उनके परिवार को मिला आत्मीय संदेश बन गई है,उज्ज्वला योजना से रसोई में मिली सुविधा का उल्लेख,पति के परिश्रम की सराहना और बच्चों के भविष्य की चिंता ने पत्र को उनके लिए खास बना दिया,दीपावली के अवसर पर मिली इस पाती ने उनके घर में त्योहार की खुशियों के साथ एक अलग तरह का अपनत्व भी जोड़ दिया।

जशपुर में बैंकर्स प्रशिक्षण सह कार्यशाला का सफल आयोजन...बिहान योजना के वित्तीय पहलुओं पर 140 प्रतिभागियों को दिया गया प्रशिक्षण

-संवाददाता-
जशपुरनगर,07 नवम्बर 2026
(घटती-घटना)।

जिला पंचायत जशपुर के सभागार में बिहान योजना अंतर्गत बैंकर्स प्रशिक्षण सह कार्यशाला का सफल आयोजन किया गया। कार्यशाला में लगभग 140 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। इसका उद्देश्य बैंकर्स एवं फील्ड स्टाफ को बिहान योजना से जुड़े वित्तीय पहलुओं की जानकारी प्रदान कर उनके कार्यों को अधिक प्रभावी बनाना था। कार्यशाला में बिहान योजना की अवधारणा,स्व सहायता समूह,क्रेडिट लिंकेज, इंटरप्राइज फाइनेंस,बीसी सखी मॉडल, बीमा योजनाएं, एनपीए निराकरण एवं कमेटी की भूमिका जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर विस्तार से चर्चा की गई।

इस दौरान मुद्रा ऋण के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाले छत्तीसगढ़ ग्रामीण बैंक के शाखा प्रबंधकों श्रीमती प्रियंका खेस,श्री रॉबिनसन केरकेट्टा, श्री गजेश कुमार शर्मा एवं श्री शशिकांत भगत को प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। कार्यशाला में बीसी सखी की भूमिका पर विशेष जोर दिया गया। प्रतिभागियों को स्व सहायता समूहों में वित्तीय साक्षरता बढ़ाने,समूहों को बैंकिंग सेवाओं से जोड़ने तथा आवश्यक दस्तावेजीकरण में सहयोग करने के संबंध में प्रशिक्षण दिया गया। कार्यशाला के माध्यम से बैंकर्स एवं फील्ड स्टाफ को बिहान योजना के वित्तीय गतिविधियों की बेहतर समझ विकसित करने तथा स्व सहायता समूहों को बैंकिंग सुविधाओं एवं ऋण सहायता से जोड़ने में अधिक प्रभावी भूमिका निभाने के लिए प्रोत्साहित किया गया।







कौन हैं अजाई और इवार? मातृभूमि में निभा रहे सलमान खान के बेटों का किरदार

सलमान खान की अपकमिंग फिल्म मातृभूमि में दो चाइल्ड आर्टिस्ट भी नजर आने वाले हैं, जिनके नाम अजाई और इवार हैं। फिल्म के गानों में भी दोनों की झलक देखने को मिल चुकी है। तो जानते हैं मातृभूमि में सलमान खान के बच्चों की भूमिका निभा रहे ये बच्चे कौन हैं? सलमान खान स्टारर वॉर ड्रामा फिल्म मातृभूमि मे वॉर रेस्ट इन पीस की थियेटर रिलीज की तारीख तय हो गई है। बॉलीवुड सुपरस्टार ने शुक्रवार,6 नवंबर 2026 को मुंबई में आयोजित फिल्म के ट्रेलर लॉन्च इवेंट के दौरान फिल्म की रिलीज डेट का भी ऐलान किया। इस इवेंट में फिल्म की कास्ट,चित्रांगदा सिंह और निर्देशक अपूर्व लाखिया भी मौजूद थे। इस दौरान पूरी कास्ट के साथ दो चाइल्ड आर्टिस्ट भी नजर आए,जो मातृभूमि में सलमान खान और चित्रांगदा सिंह के बेटों की भूमिका में नजर आने वाले हैं। अब सोशल मीडिया पर इन दोनों चाइल्ड आर्टिस्ट की चर्चा शुरू हो गई है। फिल्म के ट्रेलर लॉन्च इवेंट में इन दोनों चाइल्ड आर्टिस्ट को देखने के बाद सोशल मीडिया यूजर इनके बारे में सवाल कर रहे हैं। तो चलिए जानते हैं कि अजाई और इवार कौन हैं, जो फिल्म में सलमान खान के बेटों की भूमिका निभा रहे हैं।

कौन हैं अजाई और इवार?

शुक्रवार, 6 नवंबर को मुंबई के बांद्रा में मातृभूमि का ट्रेलर लॉन्च इवेंट रखा गया,जहां सलमान खान के साथ फिल्म की पूरी कास्ट और टीम मौजूद थी। इस फिल्म में सलमान खान और चित्रांगदा सिंह हसबैंड-वाइफ की भूमिका में नजर आएंगे और दोनों के दो बेटों की भूमिका अजाई और इवार नाम के दो चाइल्ड आर्टिस्ट प्ले कर रहे हैं। इन दोनों बच्चों का पूरा नाम अजाई अहलूवालिया और इवार अहलूवालिया है, जो टेलीविजन इंडस्ट्री के सबसे चर्चित और पसंदीदा स्टार कपल शब्बीर अहलूवालिया और कांची कौल के बेटे हैं।

सलमान खान-चित्रांगदा सिंह ने अजाई और इवार के साथ फोटोज क्लिक कराईं

सलमान खान ने मातृभूमि के ट्रेलर लॉन्च इवेंट के दौरान अजाई और इवार को स्टेज पर बुलाया और साथ में तस्वीरें क्लिक कराईं। इस वीडियो पर सोशल मीडिया यूजर्स ने भी जमकर प्रतिक्रिया दी है और शब्बीर और कांची के दोनों बेटों की जमकर तारीफ की। एक ने कमेंट में लिखा- शब्बीर और कांची के बेटे बहुत प्यारे और स्टाइलिश हैं,बिल्कुल विदेशी फुटबॉल खिलाड़ियों की तरह। वे भविष्य के फुटबॉल खिलाड़ी या बॉलीवुड स्टार्स जैसे लगते हैं। एक ने लिखा-क्या बात हैं, दोनों कितने प्यारे लग रहे हैं। वहीं कई यूजर,जिन्हें इस बात की जानकारी नहीं थी कि अजाई और इवार कांची और शब्बीर के बेटे हैं,वह दोनों के बारे में सवाल करते दिखे।

अक्षरा हासन ने पिता कमल हासन की तारीफ की: आप जैसा कोई नहीं

दिग्गज अभिनेता और राजनेता कमल हासन की छोटी बेटी,अक्षरा हासन ने इंस्टाग्राम पर एक प्यारे पोस्ट के जरिए इंडियन अभिनेता को जन्मदिन की बधाई दी। शनिवार को, अक्षरा ने कमल हासन के साथ एक मजेदार फोटो शेयर की और लिखा,कोई भी पिता बन सकता है,लेकिन हर किसी में एक पिता, दोस्त और प्रेरणा बनने की खूबी नहीं होती। जन्मदिन बहुत-बहुत मुबारक हो प्यारे बापूजी अक्षरा की बहन और कमल हासन की बड़ी बेटी,श्रुति हासन ने अपने पिता को एक शानदार अनकट हीरा और बेहद दुर्लभ इंसान बताया। अपने पिता के लिए जन्मदिन के पोस्ट में उन्होंने लिखा,जन्मदिन मुबारक हो प्यारे अप्पा! मुझे लगता है कि आप इस बात की तारीफ करेंगे कि मैं यहाँ बहुत लंबी-चौड़ी बातें नहीं कर रही हूँ कि मैं आपसे सबसे ज़्यादा प्यार क्यों करती हूँ, हालाँकि मैं हमेशा आपकी सलाह मानने में सबसे अच्छी नहीं रही हूँ (स्माइली इमोजी)। श्रुति ने आगे कहा,आज सुबह जब मैंने आपको जन्मदिन की बधाई देने के लिए फोन किया,तो सबसे पहले आपने मुझे एक फिल्म देखने की सलाह दी,जिसे आपने हाल ही में देखा था। फिर आपने विस्तार से बताया कि आपको वह फिल्म इतनी क्यों पसंद आई...सिनेमा की अपनी पसंदीदा दुनिया में इतने सालों तक काम करने के बाद भी,आपके अंदर का वह उत्साह ज़रा भी कम नहीं हुआ है। आप जिस तरह से इस जादुई जिंदगी को जीते हैं और अपनी कला के ज़रिए हमें जो तोहफ़े देते हैं,वह कमाल है।





अदिवि शेष का दिवाली संदेश : साथ रहने में ही असली खुशी

अभिनेता अदीवी शेष का कहना है कि समय के साथ दिवाली को लेकर उनकी समझ बदली है। अब उनके लिए इस त्योहार का महत्व परिवार,आपसी जुड़ाव और सोच-समझकर मनाए जाने वाले जश्न के रूप में कहीं अधिक बढ़ गया है। बचपन में मिठाइयों, नए कपड़ों और त्योहार की रौनक को याद करते हुए, अभिनेता ने मीडिया को बताया कि अब वे पटाखे फोड़ने के बजाय दीये जलाना पसंद करते हैं,क्योंकि पटाखों का जानवरों और पर्यावरण पर बुरा असर पड़ता है। जब उनसे पूछा गया कि उम्र बढ़ने के साथ दिवाली को लेकर उनकी परिभाषा कैसे बदली है,तो शेष ने मीडिया से कहाः बिल्कुल। जब आप छोटे होते हैं,तो दिवाली का मतलब होता है आपके आस-पास हो रही हर चीज़- रोशनी,जश्न और उत्साह। लेकिन जैसे-जैसे आप बड़े होते हैं,इसका महत्व आपके आस-पास के लोगों से जुड़ जाता है।

उन्हें दिवाली की असली लग्ज़री (सबसे बड़ी खुशी) समझ आ गई है।

उन्होंने कहा,मुझे एहसास हुआ है कि असली लग्ज़री यह है कि आपके सभी प्रियजन एक ही छत के नीचे हों,खुश और स्वस्थ रहें। मुझे लगता है कि त्योहार हमें यही याद दिलाने के लिए होते हैं। जिंदगी भागदौड़ भरी हो जाती है,लोग अलग-अलग जगहों पर चले जाते हैं, और आप हमेशा उतना समय साथ नहीं बिता पाते जितना आप चाहते हैं। इसलिए,जब आपको साथ समय बिताने का मौका मिलता है, तो वे पल बहुत अनमोल हो जाते हैं।

बचपन की दिवाली और आज की दिवाली में क्या फर्क है?

अदीवी ने कहा, बचपन में त्योहारों का मतलब सिर्फ उत्साह होता था। छुट्टियां, मिठाइयां,नए कपड़े और पूरा माहौल! तब आप यह नहीं सोचते थे कि लोग जश्न क्यों मना रहे हैं। बस इतना पता होता था कि यह खुशी का समय है। उन्होंने आगे कहा, जैसे-जैसे आप बड़े होते हैं, आप इस बात को लेकर अधिक जागरूक हो जाते हैं कि आपके जश्न का आपके आस-पास की दुनिया पर क्या असर पड़ता है। अब मैं पर्यावरण को लेकर कहीं अधिक जागरूक हूँ,और विशेष रूप से इस बात को लेकर संवेदनशील हूँ कि पटाखों का तेज़ शोर जानवरों पर कैसा असर डालता है। हमारे पालतू जानवर इन आवाज़ों से बहुत परेशान हो जाते हैं,और मुझे पता है कि बाहर रहने वाले कई अन्य जानवरों का भी यही हाल होता है। इसलिए आज, मैं पटाखे फोड़ने के बजाय दीये जलाना और बिना शोर-शराबे के त्योहार मनाना पसंद करता हूँ। उत्साह आज भी वैसा ही है, लेकिन मुझे लगता है कि अब इसे मनाने का मेरा नज़रिया कहीं अधिक समझदारी भरा हो गया है।



ये भारतीय संस्कृति के लिए महायज्ञ है

विवेक ओबेरॉय ने रामायण में निभाया विद्युतजिह्वा का किरदार

विवेक ओबेरॉय ने सोशल मीडिया पर एक लंबा सा नोट लिखकर रामायण की तारीफ की और इसे भारतीय संस्कृति के लिए एक महायज्ञ बताया। उन्होंने इस मेगा बजट फिल्म में विद्युतजिह्वा की भूमिका निभाई है। नितेश तिवारी की रामायण सिनेमाघरों में रिलीज होने के बाद से बॉक्स ऑफिस पर अपना दबदबा बना चुकी है। 2 ही दिनों में इस फिल्म ने 155 करोड़ से ज्यादा की कमाई कर ली है और वो भी दिवाली जैसे त्योहार के बीच। इस फिल्म में रणबीर कपूर, साई पल्लवी से लेकर यश जैसे स्टार्स मुख्य भूमिका में हैं। विवेक ओबेरॉय ने भी रामायण में काम किया है। उन्होंने फिल्म में विद्युतजिह्वा का किरदार निभाया है। अब विवेक ओबेरॉय ने सोशल मीडिया पोस्ट के जरिए फिल्म और इसकी पूरी टीम की तारीफ की है और रामायण को भारतीय संस्कृति के लिए एक महायज्ञ बताया है और विद्युतजिह्वा का किरदार निभाने को लेकर खुशी जाहिर की है। उन्होंने इस फिल्म में काम करने को एक छोटी सी आहुति बताया है और इस महागाथा को बड़े पर्दे पर लाने के लिए रणबीर कपूर, यश, साई पल्लवी और पूरी टीम के काम की भी सराहना की। विवेक ओबेरॉय ने रामायण को भारतीय संस्कृति के लिए एक महायज्ञ बताया है विवेक ओबेरॉय ने इंस्टाग्राम पर एक लंबा-चौड़ा पोस्ट शेयर करते हुए फिल्म के विशाल स्तर और इससे जुड़े लोगों की तारीफ की। रामायण को भारतीय संस्कृति के लिए एक महायज्ञ बताते हुए, अभिनेता ने कहा कि वह खुद को भाग्यशाली मानते हैं कि वह एक ऐसे प्रोजेक्ट से जुड़ने का मौका मिला, जो भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का जश्न मनाता है। इसी के साथ उन्होंने इस फिल्म का हिस्सा बनने का मौका देने के लिए फिल्म के प्रोड्यूसर नमित मल्होत्रा को भी धन्यवाद दिया है।

विवेक ओबेरॉय का पोस्ट

विद्युतजिह्वा के अपने किरदार को इस महायज्ञ में एक छोटी सी आहुति बताते हुए विवेक ओबेरॉय ने कैप्शन में लिखा, रामायण सिर्फ एक फिल्म नहीं,बल्कि यह भारतीय संस्कृति और मूल्यों के लिए एक महायज्ञ है। और विद्युतजिह्वा का किरदार निभाना इस महायज्ञ में मेरी एक छोटी सी आहुति है! मुझे इसके लिए प्रेरित करने के लिए धन्यवाद भाई, नमित मल्होत्रा! इतना बड़ा सपना देखने और श्री राम की कहानी को इतने भव्य स्तर पर दुनिया के सामने लाने के लिए धन्यवाद। अवतार (जेम्स कैमरून की फिल्म) की दुनिया भले ही कल्पना की उपज हो, लेकिन श्री राम की दुनिया हमारी सभ्यता, हमारी विरासत और हमारा सच है। भारतीय सिनेमा के लिए यह एक बहुत ही अहम पल है! विवेक ने अपने सह-कलाकारों यश, रणबीर कपूर और साई पल्लवी की तारीफ करते हुए लिखा, यश! मेरे भाई! रॉकी से लेकर रावण तक, आपका सफर बहुत ही शानदार रहा है!

साई पल्लवी का बड़ा ऐलान

नई फिल्म में निभाएंगी आईपीएस अफसर का किरदार



साउथ सिनेमा की मशहूर अभिनेत्री साई पल्लवी इन दिनों अपनी आने वाली फिल्मों को लेकर चर्चा में बनी हुई हैं। फिल्म रामायण के बाद अब उनकी एक और अपकमिंग फिल्म ओमः चैप्टर 1 का ऐलान हुआ है। इस फिल्म में अभिनेत्री एक दमदार किरदार में नजर आने वाली हैं। फिल्म की घोषणा से जुड़ी झलक में साई पल्लवी को आईपीएस अधिकारी के रूप में प्रस्तुत किया गया है। उनका यह नया अंदाज दर्शकों के बीच चर्चा का विषय बन गया है। इसी बीच अभिनेत्री ने निर्देशक राजकुमार की तारीफ करते हुए कहा कि राजकुमार सर हर अभिनेत्री के ड्रीम डायरेक्टर हैं। उनके इस बयान ने फिल्म को लेकर दर्शकों की उत्सुकता और बढ़ा दी है। साई पल्लवी अपनी शानदार अभिनय क्षमता,सादगी और अलग तरह की फिल्मों के चयन के लिए जानी जाती हैं। उन्होंने अपने करियर में कई ऐसे किरदार निभाए हैं, जिनमें भावनाओं के साथ मजबूत व्यक्तित्व भी देखने को मिला है। अब ओमः चैप्टर 1 में पुलिस अधिकारी की भूमिका उनके अभिनय सफर में एक नया अध्याय जोड़ सकती है। फिल्म ओम : चैप्टर 1 की घोषणा के बाद सबसे ज्यादा चर्चा साई पल्लवी के किरदार को लेकर हो रही है। फिल्म से जुड़ी शुरुआती झलक में उन्हें आईपीएस अधिकारी के रूप में दिखाया गया है। यह भूमिका उनके पिछले कई किरदारों से अलग नजर आती है।पुलिस अधिकारी के किरदार में एक अभिनेत्री को अनुशासन,आत्मविश्वास और मजबूत व्यक्तित्व प्रस्तुत करना होता है। ऐसे किरदारों में अभिनय के साथ शारीरिक हावभाव और संवाद अदायगी की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है।साई पल्लवी को उनके स्वाभाविक अभिनय के लिए पहचाना जाता है। ऐसे में दर्शकों को उम्मीद है कि वह इस नए किरदार में भी अपनी अलग छाप छोड़ेंगी। हालांकि, फिल्म की पूरी कहानी और उनके किरदार से जुड़ी विस्तृत जानकारी अभी सामने नहीं आई है।

खेल समाचार

हार्दिक पांड्या और अर्शदीप सिंह की होगी अदला-बदली



एमआई और पंजाब के बीच ट्रेड पर जल्द लग सकती है मुहर

नई दिल्ली,07 नवम्बर 2026। आईपीएल 2027 से पहले मुंबई इंडियंस और पंजाब किंग्स के बीच खिलाड़ियों की अदला-बदली लगभग तय मानी जा रही है। भारतीय ऑलराउंडर हार्दिक पांड्या मुंबई का साथ छोड़कर पंजाब किंग्स से जुड़ सकते हैं, जबकि बाएं हाथ के तेज गेंदबाज अर्शदीप सिंह मुंबई इंडियंस की जर्सी में नजर आ सकते हैं। दोनों फ्रेंचाइजी के बीच इस ट्रेड को लेकर बातचीत अंतिम दौर में पहुंच गई है। बी सी सीआईकी तय प्रक्रिया के तहत दोनों टीमों ने एक्सप्रेशन ऑफ इंटरेस्ट भी एक-दूसरे को सौंप दिए हैं। अब खिलाड़ियों की लिखित सहमति और अनुबंध से जुड़ी औपचारिकताएं बाकी हैं।

क्रिकबज की रिपोर्ट के मुताबिक,इस ट्रेड को लेकर कुछ समय के लिए अड़चन आई थी। माना जा रहा था कि हार्दिक पांड्या ने अपना फैसला लेने के लिए थोड़ा वक्त मांगा है। हालांकि,अब स्थिति साफ होती दिख रही है और ऑलराउंडर के पंजाब किंग्स में जाने के लिए तैयार होने की खबर है। सूत्रों के मुताबिक, दोनों खिलाड़ी इस अदला-बदली के लिए अपनी सहमति दे चुके हैं। इसके बाद दोनों फ्रेंचाइजी फीस और अनुबंध की शर्तों को अंतिम रूप देंगी। फिर बीसीसीआई की मंजूरी के साथ ट्रेड की आधिकारिक घोषणा की जा सकेगी। फिलहाल इस डील में किसी तीसरे खिलाड़ी के शामिल होने की जानकारी नहीं है। आधिकारिक ऐलान का जल्द ऐलान हो सकता है।

मुंबई को बुमराह के लिए चाहिए था मजबूत गेंदबाजी साथी

मुंबई इंडियंस के लिए अर्शदीप सिंह को टीम में शामिल करना गेंदबाजी को मजबूत करने की दिशा में बड़ा कदम हो सकता है। टीम पिछले कुछ समय से जसप्रीत बुमराह के साथ नई गेंद और डेथ ओवर्स में जिम्मेदारी संभालने वाले एक भरोसेमंद तेज गेंदबाज की तलाश में थी। पिछले आईपीएल सीजन में ट्रेंट बोल्ट और दीपक चाहर का प्रदर्शन उम्मीद के मुताबिक नहीं रहा था। ऐसे में अर्शदीप टीम की जरूरतों को पूरा कर सकते हैं।

5 साल बाद कप्तानी से दूर हो सकते हैं हार्दिक

हार्दिक पांड्या के लिए पंजाब किंग्स में जाना एक बड़े बदलाव की तरह होगा। पिछले पांच साल से वह अलग-अलग टीमों की कप्तानी करते आए हैं। उन्होंने गुजरात टाइटंस को दो सीजन तक लीड किया और इसके बाद मुंबई इंडियंस की कमान संभाली। लेकिन पंजाब में उन्हें कप्तानी की जिम्मेदारी मिलने की संभावना कम है। पंजाब किंग्स अब तक आईपीएल का खिताब नहीं जीत पाई है। 2025 के सीजन में टीम खिताब के बेहद करीब पहुंची थी, लेकिन आखिरी मंजिल हासिल नहीं कर सकी। ऐसे में हार्दिक जैसे अनुभवी खिलाड़ी का जुड़ना उसके खिताबी अभियान को मजबूती दे सकता है।

न्यायालय नजूल अधिकारी अम्बिकापुर जिला सरगुजा छ0ग0

ईश्तहार

रा0प्र0क0 - /अ-6/2026-27

एतद द्वारा सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदक दीपक कुमार कालड़ा पिता रमेश कुमार कालड़ा,उम्र 44 वर्ष,जाति सिन्धी,निवासी भगवानपुर तथा अमर कुमार कालड़ा पिता रमेश कुमार कालड़ा,उम्र- 42 वर्ष,निवासी देवीगंज रोड रूपदेव मार्केट था0तह0 अम्बिकापुर,जिला सरगुजा के द्वारा इस आशय का आवेदन पेश किया गया है,कि आवेदकगण के द्वारा अनावेदकगण भीखू प्रसाद सोनी पिता पंचम राम सोनी,साकेत कुमार सोनी पिता स्व. जगदीश प्रसाद सोनी,निवासी मायापुर था0त0 अम्बिकापुर के संयुक्त स्वामित्व व अधिपत्य की नगर अम्बिकापुर, मोहल्ला - देवीगंज रोड शीट नं. 02 स्थित नजूल भूमि प्लॉट नं. 465/3 एवं 466/2 रकबा क्रमशः 1415.7, 653.4 वर्गफीट भूमि के भू-तल पर निर्मित मकान का छत प्लाट नंबर 465/3 व 466/2 में से रकबा क्रमशः 700.13, 625 वर्गफीट भू-तल के उपर का छत खुला क्षेत्र को पंजीबद्ध विक्रय पत्र दिनांक 07.03.2023 के माध्यम से क्रय कर उस पर काबिज दाखिल हैं। अतः उक्त पंजीबद्ध विक्रय पत्र के आधार पर क्रय की गई उक्त छत के स्वामी के रूप में स्वयं का नाम दर्ज किये जाने हेतु पंजीबद्ध विक्रय पत्र की छायाप्रति मय दस्तावेज सहित आवेदन पत्र अन्तर्गत धारा 108, 110 छ.ग. भू-राजस्व संहिता 1959 के तहत प्रस्तुत किया गया है। अतः उक्त सबंध में जिस किसी व्यक्ति या संस्था को कोई दावा अथवा आपत्ति हो तो वे अपना लिखित दावा / आपत्ति स्वंय अथवा अपने अधिवक्ता के माध्यम से दिनांक-19/ 11 / 2026 तक इस न्यायालय में प्रस्तुत कर सकते हैं। नियत तिथि के पश्चात प्राप्त दावा / अपत्ति पर कोई विचार नहीं किया जावेगा।

आज दिनांक- 03/11/2026 को मेरे न्यायालयीन मुद्रा एंव हस्ताक्षर से जारी किया गया।

सील

नजूल अधिकारी अम्बिकापुर

एससी दिल्ली की शानदार जीत

पुणे,07 नवम्बर 2026। इंडियन सुपर लीग में एससी दिल्ली ने शानदार प्रदर्शन करते हुए इंटर काशी को 3-0 से हरा दिया। मुकाबले में एससी दिल्ली ने तीन गोल दागकर अपनी आक्रामक क्षमता का परिचय दिया, जबकि इंटर काशी की टीम एक भी गोल नहीं कर सकी। इस जीत के साथ एससी दिल्ली ने मैदान पर अपनी प्रभावी मौजूदगी दर्ज कराई।एससी दिल्ली के लिए यह मुकाबला परिणाम के लिहाज से महत्वपूर्ण रहा। टीम ने तीन गोल के अंतर से जीत हासिल कर अपनी ताकत दिखाई। वहीं, इंटर काशी के लिए यह मुकाबला निराशाजनक रहा। टीम पूरे मैच में गोल करने में असफल रही और उसे बिना किसी गोल के हार स्वीकार करनी पड़ी।फुटबॉल में 3-0 की जीत किसी भी टीम के लिए महत्वपूर्ण मानी जाती है। इस तरह के परिणाम में विजेता टीम के आक्रमण के साथ उसका रक्षात्मक प्रदर्शन भी सामने आता है। एससी दिल्ली ने इंटर काशी को गोल करने का मौका नहीं दिया और मुकाबले का परिणाम अपने पक्ष में रखा।इस मुकाबले की सबसे बड़ी विशेषता एससी दिल्ली की तीन गोल की बढ़त रही। टीम ने विपक्षी गोलपोस्ट तक पहुंचने में सफलता हासिल की और अपने अवसरों को गोल में बदलकर जीत सुनिश्चित की। इंटर काशी की टीम के लिए एससी दिल्ली के खिलाफ गोल नहीं कर पाना बड़ी चुनौती साबित हुआ।



नाम परिवर्तन सूचना

प्रारूप (तीन)

मैं लगन साय आ. दून्ड राम उम्र 39 वर्ष जाति गोंड निवासी ग्राम वृंदावन पोस्ट बकालो थाना व तहसील प्रेमनगर जिला सूरजपुर (छ.ग.) का स्थायी निवासी हूं।

मैं अपने नाबालिग पुत्र भगवान सिंह ठाकुर (BHAGVAN SINGH TAKUR) से बदलकर ठाकुर सिंह (THAKUR SINGH) करवाना चाहता हूं। जो मेरे पुत्र के जन्म प्रमाण पत्र में दर्ज है।

3. मैं अपने पुत्र का नाम बदलकर,यदि कोई, गैर कानूनी काम करता हूं तो उसके लिए स्वयं जिम्मेदार रहूंगा ।

4. मेरे पत्नी सुनीता मरकाम को हमारे नाबालिग पुत्र के नाम बदलने में कोई आपत्ति नहीं है।

यह शपथ पत्र अपने पूरे होशोहवास में रहकर हस्ताक्षर कर रहा हूं तथा सक्षम प्राधिकारी के समक्ष प्रस्तुत कर रहा हूं।

शपथकर्ता

लगन साय आ. दून्ड राम
निवासी ग्राम वृंदावन पोस्ट बकालो थाना व तहसील प्रेमनगर जिला सूरजपुर (छ.ग.) ।

नाम परिवर्तन सूचना

मैं धनीराम आ0 श्री बिरतिया उम्र 38 वर्ष निवासी ग्राम बबौली थाना व तह0 धौरपुर जिला सरगुजा (छ0ग0) का स्थाई निवासी हूं।

यह कि पुत्र शेखर राम (SHEKHAR RAM) के कक्षा 10 वीं के मार्कशीट में मेरे पुत्र का नाम शेखर राम (SHEKHAR RAM) दर्ज है। जो सत्य एवं सही है।मेरे पुत्र शेखर राम (SHEKHAR RAM) के आधार कार्ड नंबर 8935 4503 3325 में पुत्र का नाम त्रुटिवश सुनम साय दर्ज है। जो गलत है।

आधार कार्ड में दर्ज त्रुटि नाम के स्थान पर मेरे पुत्र का सही एवं पूरा नाम शेखर राम (SHEKHAR RAM) संशोधित कर दर्ज करवाने के संबंध में स्वयं का शपथ पत्र निष्पादित कर प्रस्तुत कर रहा हूं।

शपथकर्ता

धनीराम

1000 करोड़ की धोखाधड़ी...कारोबारी को पकड़ने रायपुर पहुंची कोलकाता पुलिस

महेंद्र गोयनका परिवार समेत फरार,एमपी के विधायक की कंपनी से भी ठगी का आरोप

रायपुर,07 नवम्बर 2026। रायपुर के कारोबारी महेंद्र गोयनका और उनके साथियों को गिरफ्तार करने के लिए कोलकाता पुलिस शनिवार को रायपुर पहुंची। गोयनका पर करीब 1,000 करोड़ रुपए की संपत्तियों और कंपनियों के शेयरों से जुड़ी कथित धोखाधड़ी का आरोप है। इसी मामले में उन्हें गिरफ्तार करने पुलिस पहुंची थी,लेकिन वह परिवार सहित फरार हो गया। कोलकाता हाईकोर्ट से आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए नया वारंट जारी हुआ था। पुलिस टीम रायपुर में उनकी तलाश कर रही है। गिरफ्तारी के बाद आरोपियों को कोलकाता ले जाकर सक्षम अदालत में पेश किया जाना था,जहां पुलिस रिमांड की मांग करती। धोखाधड़ी के मामले में दर्ज एफआईआर में महेंद्र गोयनका, अभिषेक अग्रवाल,अशोक रैकवार,मनीष गोयनका,सुरेंद्र सिंह सलूजा और धनेश शिवहरे समेत महेंद्र गोयनका एंड संस और सुशील गोयनका एंड संस के नाम शामिल हैं।



महेंद्र गोयनका के भाई और पत्नी पर भी घोटाले का आरोप

वकील अमरेंद्र दास ने बताया कि कोलकाता पुलिस कारोबारी महेंद्र गोयनका को गिरफ्तार करने आनंदम सिटी पहुंची थी। गोयनका पर करोड़ों के घोटाले का आरोप है। उनके परिवार के एचयूएफ के खिलाफ भी धोखाधड़ी का मामला दर्ज है। कोलकाता के 3-4 थानों में उनके खिलाफ मामले दर्ज हैं। महेंद्र गोयनका के भाई और पत्नी पर भी कई कंपनियों में धोखाधड़ी करने का आरोप है।

एमपी के विधायक से करोड़ों की ठगी

वकील के मुताबिक, आज जिस मामले में कोलकाता पुलिस पहुंची थी, वह बउबाजार थाने में दर्ज है। महेंद्र गोयनका ने कटनी शहर के विधायक और पूर्व मंत्री संजय पाठव की पारिवारिक कंपनी में भी करोड़ों का घोटाला किया है। इसी मामले में पुलिस रायपुर पहुंची थी, लेकिन कारोबारी फरार हो गया। वह रायपुर में ही इधर-उधर छिप रहा है। शहर के स्थानीय लोग घनश्याम अग्रवाल उसे सपोर्ट कर रहे हैं। जुलाई में भी वह 14 दिनों तक हिरासत में था। यह मामला यूरो प्रतीक इस्पात इंडिया प्राइवेट लिमिटेड और उससे जुड़ी कंपनियों के शेयरों पर कथित अवैध कब्जे से जुड़ा है। कोलकाता में दर्ज एफआईआर के मुताबिक, रायपुर के कारोबारी महेंद्र गोयनका और उनके सहयोगियों पर जाली दस्तावेज, फर्जी हस्ताक्षर और कंपनी की नकली मुहरों के जरिए शेयरों का मालिकाना हक बदलने का आरोप है।

5 हजार शेयरों को अपने नाम ट्रांसफर दिखाया

एफआईआर के मुताबिक, एडमिट विनट्रेड प्राइवेट लिमिटेड के डायरेक्टर गोपाल कुमार यादव ने शिकायत दर्ज कराई है। उनका आरोप है कि उनकी कंपनी के पास व्यू टेक मार्केटिंग प्राइवेट लिमिटेड के 5 हजार इक्विटी शेयर थे। कंपनी ने ये शेयर फ्यूचर डीलट्रेड प्राइवेट लिमिटेड से खरीदे थे। शिकायतकर्ता के मुताबिक, शेयर ट्रांसफर की प्रक्रिया पूरी होने के बाद 4 फरवरी 2018 को कंपनी ने इन शेयरों को एडमिट विनट्रेड के नाम दर्ज कर दिया था। इसके मूल शेयर सर्टिफिकेट भी शिकायतकर्ता कंपनी के पास थे।

पुराने रिकॉर्ड में बदलाव कर दोबारा दाखिल किया रिटर्न

शिकायत में आरोप लगाया गया है कि बाद में आरोपियों ने 6 जुलाई 2018 की कथित बोर्ड मीटिंग के प्रस्ताव के आधार पर वित्तीय वर्ष 2016-17 का संशोधित वार्षिक रिटर्न दाखिल किया। इसमें दिखाया गया कि 9 मार्च 2017 को ही 5 हजार शेयर फ्यूचर डीलट्रेड से महेंद्र गोयनका एंड संस के नाम ट्रांसफर हो गए थे। शिकायतकर्ता का कहना है कि उसकी कंपनी ने न तो शेयर बेचने की सहमति दी थी और न ही इसके बदले कोई रकम मिली थी। शेयर ट्रांसफर से संबंधित कोई दस्तावेज भी कंपनी ने हस्ताक्षर नहीं किए थे। आरोप है कि फर्जी दस्तावेजों के जरिए पुराने रिकॉर्ड में बदलाव कर शेयरों पर कब्जा करने की कोशिश की गई।

छत्तीसगढ़ के अबूझमाड़ के बिनागोंडा गांव में 45 साल बाद उत्साह से मनायी गई दिवाली



कांकेर/नारायणपुर,07 नवम्बर 2026। छत्तीसगढ़ के बस्तर संभाग के अबूझमाड़ अंचल से एक ऐसी तस्वीर सामने आई है,जो बदलते सामाजिक परिवेश और शांति की नई उम्मीदों की कहानी बयां करती है। नारायणपुर जिले के नक्सल प्रभावित ग्राम बिनागोंडा में करीब 45 वर्षों बाद इस बार दिवाली का त्योहार खुशियों, उत्साह और आपसी भाईचारे के साथ मनाया गया। दशकों तक भय और हिंसा के साये में रहे इस गांव में जब दीपों की रोशनी बिखरी तो यह नजारा महज एक त्योहार का आयोजन नहीं, बल्कि ग्रामीण जीवन में नई उम्मीदों के आगमन का प्रतीक बन गया।

अबूझमाड़ क्षेत्र का बिनागुंडा (या बिनागोंडा) गाँव प्रशासनिक रूप से छत्तीसगढ़ के नारायणपुर जिले की ओरछा (अबूझमाड़) तहसील के अंतर्गत आता है। जनगणना 2011 के आंकड़ों के अनुसार यह जिला मुख्यालय नारायणपुर से दक्षिण दिशा में लगभग 44 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। लेकिन पुलिस प्रशासन और नक्सल अभियानों के रिकॉर्ड के अनुसार यह छोटे बेठिया थाना (जिला कांकेर) क्षेत्र के अंतर्गत आता है। छत्तीसगढ़ और महाराष्ट्र की सीमा पर स्थित अबूझमाड़ के बिनागुंडा (बिनागोंडा) क्षेत्र में सुरक्षा बलों की मुस्तैदी और विकास कार्यों के चलते दशकों बाद इस वर्ष 2026 में दिवाली का त्योहार बेहद खास तरीके से मनाया गया है। हाल ही में सुरक्षा बलों और स्थानीय आदिवासियों ने मिलकर बिनागुंडा क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण पुल का निर्माण किया। इस प्रतिबंधित घने वनांचल क्षेत्र में नक्सलियों ने आतिशबाजी और पटाखों पर रोक लगा रखी थी,क्योंकि वे पटाखों की आवाज़ का इस्तेमाल अपनी सुरक्षा इकाइयों के बीच संपर्क या लोकेशन बताने के लिए करते थे। क्षेत्र के नक्सलमुक्त होने के बाद अब यहाँ ग्रामीण और बच्चे खुलकर पटाखे जला रहे हैं। बिनागुंडा और अबूझमाड़ के अंदरूनी क्षेत्रों से ग्रामीण खुलकर नारायणपुर और नजदीकी बाजारों में दिवाली की खरीदारी (दीये, कपड़े और पटाखे) करने पहुंचे।

नारायणपुर और उसके आसपास के वनांचल गांवों (जैसे कुतुल, बिनागोंडा) में सुरक्षा कैंप और नई सड़कें बनने से अब ग्रामीण बेझिझक बाजारों तक पहुंच रहे हैं। पहले जहां लोग आने-जाने से कतराते थे,अब वहां दिवाली की खरीदारी,मिठाइयों और दीयों की भारी मांग देखी जा रही है।

छत्तीसगढ़ प्रशासन की 'नियत नेल्लानार योजना' और बुनियादी सुविधाओं (सड़क,मोबाइल नेटवर्क, बिजली,पीडीएस राशन) के पहुंचने से दशकों से कटे हुए इन गांवों के लोगों में एक नया विश्वास जगा है। स्वतंत्रता दिवस पर तिरंगा फहराने के बाद अब दिवाली पर दीप जलाकर ग्रामीण राष्ट्रीय मुख्यधारा में लौटने के साथ उत्सव मना रहे हैं।

छत्तीसगढ़ कोयला लेवी केस

सूर्यकांत तिवारी के करीबी आरके जैन को सुप्रीम कोर्ट से जमानत



बिलासपुर,07 नवम्बर 2026। छत्तीसगढ़ के चर्चित कोयला लेवी मामले में सुप्रीम कोर्ट ने मुख्य आरोपी सूर्यकांत तिवारी के कथित सहयोगी राकेश जैन उर्फ आर।के। जैन को नियमित जमानत पर रिहा करने का आदेश दिया है। मुख्य न्यायाधीश,न्यायमूर्ति जॉयमाल्या बागची और न्यायमूर्ति वी। मोहना की पीठ ने सुनवाई के बाद याचिका का निपटारा करते हुए ट्रायल कोर्ट द्वारा तय की जाने वाली शर्तों पर रिहाई के निर्देश दिए। इससे पहले छत्तीसगढ़ हाईकोर्ट ने 27 जुलाई 2026 को उनकी जमानत अर्जी खारिज कर दी थी। अभियोजन का आरोप है कि कोयला परिवहन पर प्रति टन 25 रुपये की अवैध वसूली की गई, जो लगभग 540 करोड़ रुपये बताई जाती है। जैन पर आरोप है कि उन्होंने इस राशि को खपाने में मदद की। उन्हें 11 दिसंबर 2025 को गिरफ्तार किया गया था। सुप्रीम कोर्ट ने गौर किया कि जैन का नाम शुरुआती एफआईआर में नहीं था और उन्हें 10 मार्च 2026 को दाखिल चौथे पूरक आरोपपत्र में आरोपी बनाया गया। कोर्ट ने यह भी कहा कि सह-आरोपी पहले ही जमानत पर हैं, जांच पूरी हो चुकी है और आरोपपत्र दाखिल हो चुका है।

कांकेर में 2।23 करोड़ का गांजा फेंककर फरार तस्कर पकड़ाया

फॉर्च्यूनर में 3 राज्यों की फर्जी नंबर प्लेट लगाकर करता था तस्करी,आरोपी यूपी से गिरफ्तार...

कांकेर,07 नवम्बर 2026। छत्तीसगढ़ के कांकेर में 2 करोड़ 23 लाख रुपए का 447 किलो गांजा तस्करी कर ले जा रहे हरियाणा के आरोपी को पुलिस ने उत्तर प्रदेश से गिरफ्तार किया है। आरोपी पुलिस की चेकिंग से बचने के लिए फॉर्च्यूनर कार में ओडिशा, महाराष्ट्र और हरियाणा की 6 अलग-अलग फर्जी नंबर प्लेट रखता था। पुलिस ने 300 से ज्यादा सीसीटीवी कैमरों के फुटेज खंगालकर उसे पकड़ लिया। आरोपी गांजा ओडिशा से खरीदकर हरियाणा ले जाने की तैयारी में था। पुलिस ने उसके पास से 447।720 किलो गांजा, फॉर्च्यूनर कार, 6 फर्जी नंबर प्लेट और मोबाइल फोन जब्त किया है। जब्त सामान की कुल कीमत करीब 2 करोड़ 48 लाख 60 हजार रुपए आंकी गई है। पुलिस के मुताबिक, 4 नवंबर को मुखबिर से सूचना मिली थी कि फॉर्च्यूनर कार में गांजा भरकर ओडिशा से केशकाल के रास्ते कांकेर लाया जा रहा है। सूचना मिलते ही पुलिस ने गढ़पिछवाड़ी चौक बायपास रोड पर नाकेबंदी की। करीब एक घंटे बाद संदिग्ध कार वहां पहुंची। पुलिस को देखकर चालक ने तेज रफ्तार से गाड़ी भगाई और घेराबंदी तोड़कर कांकेर शहर की ओर भाग निकला। इसके बाद पुलिस ने माकड़ी पुलिया और ज्ञानी चौक पर भी नाकेबंदी की। शहर की गलियों और आसपास के इलाकों में तलाश शुरू की गई। पुलिस की नाकेबंदी की वजह से तस्कर सुनसान जगह देखकर गांजे के पैकेट फेंककर फरार हो गए।



300 से ज्यादा सीसीटीवी कैमरों के फुटेज खंगाले

कार चालक पुलिस की घेराबंदी तोड़कर भागने के बाद लगातार अपनी लोकेशन बदल रहा था। वह मोबाइल भी बंद कर देता था। इससे पुलिस को उसे पकड़ने में काफी परेशानी हुई। इसके बाद पुलिस और साइबर सेल की टीम ने 300 से ज्यादा सीसीटीवी कैमरों के फुटेज खंगाले। टोल नाकों, पेट्रोल पंपों और मुख्य चौराहों पर लगे कैमरों की भी जांच की गई। लगातार तलाश के बाद पुलिस ने आरोपी को उत्तर प्रदेश से पकड़ लिया।

एक ही कार में रखता था 3 राज्यों की नंबर प्लेट

पूछताछ में आरोपी की पहचान सुखपाल उर्फ सुक्खा (30), निवासी स्वामी नगर वार्ड-8, पुराना वाटर वर्क्स के पास, जिला फतेहाबाद, हरियाणा के रूप में हुई। उसने पुलिस को बताया कि वह ओडिशा से सस्ते दाम पर गांजा खरीदकर हरियाणा और आसपास के राज्यों में ऊंचे दाम पर बेचने की तैयारी में था। पुलिस के मुताबिक, आरोपी चेकिंग से बचने के लिए एक ही कार में ओडिशा, महाराष्ट्र और हरियाणा की अलग-अलग नंबर प्लेट रखता था। रास्ते में पुलिस की जांच से बचने के लिए वह जरूरत के हिसाब से नंबर प्लेट बदल लेता था। उसके पास से 6 फर्जी नंबर प्लेट बरामद हुई है। पुलिस ने आरोपी को 7 नवंबर को गिरफ्तार कर न्यायिक रिमांड पर अदालत में पेश किया। उसके खिलाफ एनडीपीएस एक्ट के तहत मामला दर्ज किया गया है। कार्रवाई में 2 करोड़ 23 लाख 50 हजार रुपए का गांजा, करीब 25 लाख रुपए की फॉर्च्यूनर कार और करीब 10 हजार रुपए का मोबाइल जब्त किया गया है। कुल जब्ती 2 करोड़ 48 लाख 60 हजार रुपए की है।

स्वच्छता में छत्तीसगढ़ का डंका...रायपुर-बिलासपुर-बिल्हा को मिलेगा राष्ट्रीय पुरस्कार,राष्ट्रपति करेंगी सम्मानित

रायपुर,07 नवम्बर 2026। स्वच्छता के क्षेत्र में छत्तीसगढ़ ने एक और महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है। स्वच्छ सर्वेक्षण 2025-26 के अंतर्गत प्रदेश के तीन शहरों रायपुर, बिलासपुर और बिल्हा का राष्ट्रीय पुरस्कारों के लिए चयन किया गया है। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु आगामी 11 नवंबर को नई दिल्ली के विज्ञान भवन में आयोजित राष्ट्रीय सम्मान समारोह में इन तीनों शहरों को पुरस्कृत करेंगी। यह उपलब्धि प्रदेश में स्वच्छता व्यवस्था को बेहतर बनाने के लिए किए जा रहे निरंतर प्रयासों, सफाई मित्रों के समर्पण और नागरिकों की सक्रिय भागीदारी का परिणाम है। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने इस उपलब्धि पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए रायपुर, बिलासपुर और बिल्हा के नागरिकों, जनप्रतिनिधियों,नगरीय निकायों के अधिकारियों-कर्मचारियों तथा सफाई मित्रों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं दी हैं। उन्होंने कहा कि देश के सर्वोच्च संवैधानिक पद पर आसीन राष्ट्रपति के हाथों छत्तीसगढ़ के तीन शहरों का सम्मानित होना पूरे प्रदेश के लिए गौरव और प्रसन्नता का विषय है। यह सम्मान उन हजारों सफाई मित्रों के परिश्रम का सम्मान है,जो प्रतिदिन हमारे शहरों को स्वच्छ और सुंदर बनाए रखने के लिए अथक मेहनत करते हैं। साथ ही यह उन जागरूक नागरिकों की सहभागिता का भी सम्मान है, जिन्होंने स्वच्छता को अपनी जिम्मेदारी समझकर इस अभियान को सफल बनाने में योगदान दिया है। मुख्यमंत्री साय ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में स्वच्छ भारत अभियान ने देश में स्वच्छता के प्रति एक नई चेतना जागृत की है। आज स्वच्छता केवल सरकारी कार्यक्रम नहीं, बल्कि जनभागीदारी से संचालित एक व्यापक जन आंदोलन का रूप ले चुकी है। छत्तीसगढ़ भी इसी संकल्प के साथ आगे बढ़ रहा है। हमारी सरकार का प्रयास है कि प्रदेश के सभी शहरों में स्वच्छता की बेहतर व्यवस्था हो, नागरिकों को स्वच्छ और स्वस्थ वातावरण मिले तथा स्वच्छता के प्रति सामूहिक जिम्मेदारी की भावना और मजबूत हो।



केंद्रीय मंत्रालय ने पत्र भेजकर दी राष्ट्रीय पुरस्कारों के लिए चयन की जानकारी

केंद्रीय आवासन और शहरी कार्य मंत्रालय ने राज्य सरकार को पत्र भेजकर रायपुर, बिलासपुर और बिल्हा के राष्ट्रीय पुरस्कारों के लिए चयन की औपचारिक जानकारी दी है। मंत्रालय के सचिव सतेंद्र सिंह ने राज्य में संचालित स्वच्छता गतिविधियों और नागरिक सहभागिता की सराहना करते हुए इन शहरों के प्रयासों को महत्वपूर्ण बताया है। मंत्रालय द्वारा भेजे गए पत्र में उल्लेख किया गया है कि स्वच्छ भारत के लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में नागरिकों की सहभागिता और नगरीय निकायों के प्रयासों की महत्वपूर्ण भूमिका है। छत्तीसगढ़ के तीन शहरों का राष्ट्रीयस्तर पर चयन यह दर्शाता है कि स्वच्छता के क्षेत्र में निरंतर प्रयास और सामूहिक भागीदारी से उल्लेखनीय उपलब्धियां हासिल की जा सकती हैं।

स्वच्छता की नई पहल-बढ़ाएं हाथ,करें सफाई साथ' की भावना को मिली मजबूती

स्वच्छ सर्वेक्षण 2025-26 की थीम 'स्वच्छता की नई पहल - बढ़ाएं हाथ,करें सफाई साथ' रखी गई है। यह थीम स्वच्छता के प्रति सामूहिक जिम्मेदारी, जनजागरूकता और नागरिक सहभागिता के महत्व को रेखांकित करती है। रायपुर,बिलासपुर और बिल्हा का राष्ट्रीय पुरस्कारों के लिए चयन इस बात का प्रमाण है कि स्वच्छता के प्रयासों को प्रभावी बनाने में प्रशासनिक व्यवस्थाओं के साथ-साथ आम नागरिकों का सहयोग भी अत्यंत आवश्यक है। नगरीय निकायों के अधिकारियों-कर्मचारियों,स्वच्छता कार्यों में लगे मैदानी अमले और सफाई मित्रों के निरंतर प्रयासों ने इन शहरों को राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

दीपावली पर रायपुर में नहीं बिकेगा नॉनवेज

होटल-रेस्टोरेंट में भी प्रतिबंध,बेचते मिले तो होगी जब्ती और कानूनी कार्रवाई

रायपुर,07 नवमबर 2026। राजधानी रायपुर में दीपावली यानी 8 नवंबर को मांस-मटन की बिक्री पूरी तरह प्रतिबंधित रहेगी। महावीर निर्वाण दिवस के अवसर पर रायपुर नगर निगम ने शहर के सभी मांस-मटन दुकानों और पशुवध गृहों को बंद रखने का आदेश जारी किया है। यह प्रतिबंध नगर निगम के पूरे इलाके में लागू रहेगा। इसके साथ ही होटल और रेस्टोरेंट में भी नॉनवेज बेचने और परोसने पर रोक रहेगी। आदेश का उल्लंघन करने वालों के खिलाफ नगर निगम की टीम कार्रवाई करेगी।

महापौर के निर्देश पर जारी हुआ आदेश

छत्तीसगढ़ शासन के नगरीय प्रशासन एवं विकास विभाग के निर्देशों के पालन में नगर निगम के स्वास्थ्य विभाग ने यह आदेश जारी किया है। इसके तहत 8 नवंबर 2026, रविवार को पूरे नगर निगम क्षेत्र में मांस-मटन का विक्रय प्रतिबंधित रहेगा। शहर के सभी पशुवध गृह और मांस-मटन की दुकानें बंद रखनी होंगी।



दुकानों के साथ होटल-रेस्टोरेंट पर भी नजर

नगर निगम का यह प्रतिबंध केवल मांस-मटन की दुकानों तक सीमित नहीं रहेगा। होटल, रेस्टोरेंट और अन्य व्यावसायिक प्रतिष्ठानों में भी मांस-मटन की बिक्री पर रोक रहेगी। महापौर मीनल चौबे ने अधिकारियों को आदेश का सख्ती से पालन कराने के निर्देश दिए हैं।

बेचते मिले तो मौके पर जब्त होगा मांस-मटन

नगर निगम ने साफ किया है कि आज यदि कोई दुकान, होटल या अन्य प्रतिष्ठान मांस-मटन बेचते हुए पाया जाता है तो मौके पर ही सामग्री जब्त की जाएगी। संबंधित व्यक्ति,संचालक या संस्था के खिलाफ नियमानुसार कार्रवाई भी की जाएगी।

निगरानी के लिए अधिकारियों को जिम्मेदारी

प्रतिबंध का पालन सुनिश्चित कराने के लिए नगर निगम के जोन स्वास्थ्य अधिकारियों और जोन स्वच्छता निरीक्षकों को जिम्मेदारी सौंपी गई है। अधिकारी अपने-अपने जोन में मांस-मटन की दुकानों का निरीक्षण और निगरानी करेंगे। निगम प्रशासन ने संबंधित कारोबारियों और होटल संचालकों से आदेश का पालन करने को कहा है।

मातम में बदली दिवाली की खुशियां : करंट लगने से पिता-पुत्र की मौत,अब मां ने भी इलाज के दौरान तोड़ा दम

बलौदा बाजार,07 नवम्बर 2026। छत्तीसगढ़ के बलौदा बाजार में शुक्रवार को करंट लगने से पिता-पुत्र की मौत हो गई। वहीं गंभीर रूप से झुलसी महिला ने भी आज इलाज के दौरान दम तोड़ दिया है। इस घटना ने अब पूरे परिवार की दिपावली की खुशियों को मातम में बदल दिया है। बता दें कि नेहरू चौक में रहने वाले राकेश गुप्ता शुक्रवार सुबह घर में साफ सफाई कर रहे थे। इसी दौरान वह घर से महज पांच फीट की दूरी से गुजर रही हाईटेंशन बिजली लाइन की चपेट में आ गए थे। चीख पुकार सुनकर बचाने पहुंची पत्नी वर्षा और बेटा ईशान भी करंट की चपेट में आकर झुलस गए थे। इस घटना में राकेश और उसके बेटे ईशान की मौके पर ही मौत हो गई थी। वहीं गंभीर रूप से घायल वर्षा को जिला चिकित्सालय में प्राथमिक इलाज के बाद रायपुर रिफर किया गया था,जहां उनका निजी अस्पताल में इलाज जारी था। आज सुबह ही उसने इलाज के दौरान दम तोड़ दिया। इस घटना से अब पूरे इलाके और परिवार में शोक की लहर है। इस घटना का दिल दहला देने वाला वीडियो भी सामने आया था।



नितिन नबीन के छत्तीसगढ़ दौरे पर भूपेश बघेल ने कसा तंज...कहा- भाजपा को आदिवासी शब्द से है नफरत,वनवासी शब्द का राहुल गांधी ने विरोध किया तो उसे जनजातीय कर दिए...

रायपुर,07 नवम्बर 2026। पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने जनजातीय गौरव दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में भाजपा अध्यक्ष नितिन नबीन के शामिल होने पर तंज कसा है। पूर्व मुख्यमंत्री ने कहा कि विश्व आदिवासी दिवस ये लोग मानते नहीं है,उसमें कोई कार्यक्रम भी नहीं करते हैं, और ना ही भाजपा के लोग शामिल होते हैं। दरअसल,भाजपा को आदिवासी शब्द से नफरत है। वनवासी शब्द का जब से राहुल गांधी ने विरोध किया,तब से वो जनजातीय कर दिए। लोकसभा के नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी के दीपावली मिलन समारोह में शामिल होकर दिल्ली से रायपुर पहुंचे पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने नितिन नवीन पर हमला जारी रखते हुए कहा कि वे अब छत्तीसगढ़ आ रहे हैं, तो कुछ ना कुछ ऊल-जलूल बोलेंगे। भाजपा के नेताओं के बोल बिगड़े हुए हैं। अमित शाह जी का भी संतुलन बिगड़ा हुआ है। लोकसभा में वह कहते हैं, आप एसआईआर पर चर्चा नहीं कर सकते और यहां चुनौती दे रहे हैं कि राहुल गांधी को एसआईआर पर चर्चा कर ले। राहुल गांधी के निवास पर दीपावली मिलन समारोह को लेकर पूर्व मुख्यमंत्री ने बताया कि शॉर्ट नोटिस में बहुत सारे नेताओं को निमंत्रण दिया गया था। बहुत से लोग उपस्थित हुए। बहुत अच्छा कार्यक्रम रहा। सोनिया गांधी, राहुल गांधी, प्रियंका गांधी, सभी लोग उपस्थित थे। सभी नेताओं से मुलाकात हुई। वहीं एसआईआर को लेकर उप मुख्यमंत्री विजय शर्मा के बयान पर पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने पलटवार करते हुए कहा कि वो उप मुख्यमंत्री बन गए हैं, लेकिन उनको संवैधानिक व्यवस्थाओं के बारे में समझ नहीं है। वह एक मुस्लिम व्यक्ति का नाम लेकर बोलते हैं कि एक बार नहीं 10 बार नाम काटेंगे, इसका मतलब क्या है? उन्होंने कहा कि विजय शर्मा जिस पद में बैठे हैं, वह स्वीकार कर रहे हैं कि निर्वाचन आयोग उनकी जेब में है। यानी निर्वाचन आयोग सरकार के अधीन है। भारत निर्वाचन आयोग केंद्र सरकार के अधीन है, राज्य निर्वाचन आयोग छत्तीसगढ़ सरकार के अधीन है।



प्रकाशक,मुद्रक,स्वामी अविनाश कुमार सिंह के द्वारा सांई ऑफ्सेट प्रिंटर्स,नमनाकला,संत हरकेवल विद्यापीठ के पास,अम्बिकापुर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-अविनाश कुमार सिंह* (पी.आर.बी.कानून के अनुसार संपूर्ण संपादकीय दायित्व के लिए जिम्मेदार)
RNI Reg.No.CHHHIN/2004/15050,डॉक रजिस्टर्ड क्र.:-13/सरगुजा/डीएन/2026-2028-मो. 94062-23001,98265-32611,Email:ghatatighatana11@ gmail.com,Website:www.ghatatighatana.com, (सभी विवादों का न्याय क्षेत्र अम्बिकापुर न्यायालय मान्य होगा)